चन्दामामा
दीपावली विशेषांक

यह बेहतरीन है!

IS:1011
ISI

साठे बिस्कुट ऐण्ड चॉकलेट कं. लि., पूना-२

नवम्बर १९६१

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे
वार्षिक चन्दा रु. ६—००

LIFEBUOY
SOAP
स्नान का मज़ा और ताज़गी का
आनंद लेना है तो लाइफ़बॉय से नहाइये।
आपकी तबीयत खिल उठेगी — तन मन तरोताज़ा
हो जायेगा! लाइफ़बॉय गंदगी में छिपे
कीटाणुओं को भी धो डालता है — और आप के सारे
परिवार को तंदुरुस्त रखता है!
लाइफ़बॉय है जहाँ,
तंदुरुस्ती है वहाँ!
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन
L. 26-X29 III

SPECTRUM
COLOUR
PENCILS
स्पेक्टरम
रंगीन
पेन्सिल
बच्चों के लिये, नक्शा बनाने, व चित्र बनाने के लिये, ये पेन्सिलें अत्यन्त आवश्यक हैं। तरह तरह के रंगों में ये प्राप्य हैं।
निर्माता:
दी मद्रास पेन्सिल फेक्टरी
मद्रास - २१

प्रफुल्ल
मुख-कान्ति के लिए
Remy
BORATED
TALCUM POWDER
रेमी
टाल्कम पाउडर

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

लगता है समय पंख लगाकर चलता है। देखते-देखते एक वर्ष बीत गया, फिर दीपावली आ गई।

और दीपावली के साथ लीजिये "चन्दामामा" का विशेषांक भी आपके हाथ में है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अनेक कठिनाइयों के बावजूद, हम यह विशेषांक प्रस्तुत कर रहे हैं। कठिनाई विशेषतः कागज़ की है।

प्रायः पाठक लिखते हैं कि "चन्दामामा" के और भी विशेषांक निकाले जायें। काश हम प्रकाशित कर पाते।

इस विशेषांक के साथ दीपावली के शुभ अवसर पर "चन्दामामा" परिवार की शुभ कामनायें आप सब स्वीकार करें।

वर्ष: १३ नवम्बर १९६१ अंक: २

भारत का इतिहास

हमारा देश भारत देश है। किसी समय इसको भारतवर्ष भी कहा जाता था, फारस के लोगों ने इसको हिन्दुस्तान कहा। "हिन्दु" शब्द "सिन्धु" शब्द का रूपान्तर है।

हमारे देश की सभ्यता, प्रप्रथम, कहा जाता है सिन्धु घाटी में विकसित हुई। इसीलिए यह नाम पड़ा है।

हमारे देश का वर्गफल १२,६०,००० वर्गमील है। इस विशाल देश के उत्तर में हिमाच्छित पर्वत पंक्ति है। बीच में निर्जन मरुस्थल है। नदी नद से सम्पन्न उर्वर भूमि है। दुर्ग के समान वन है।

इस देश के वासियों में जहाँ शिकार और वन में उपलब्ध कन्द मूलों पर निर्वाह करनेवाले आदिम जातियाँ हैं वहाँ अत्युत्तम, सभ्य लोग, ज्ञानी भी हैं।

यह कहना कि हमारा देश कभी एक न था, कभी किसी सम्राट का देश के किसी भाग पर पूर्ण प्रभुत्व रहा तो कभी किसी सम्राट का, पिछली शताब्दी में, ब्रिटेन के शासन में ही यह एक हुआ, ठीक नहीं है।

"उत्तरं यत् समुद्रस्य
हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं
वर्षं तद् भारतं नाम
भारती यत्र सन्तति"

विष्णु पुराण के इस श्लोक का अर्थ है—हिमालय के दक्षिण में, समुद्र (हिन्दु समुद्र) के उत्तर के भूभाग को भारत देश कहा जाता है। और उसमें रहनेवाले भारत की सन्तान है।

असभ्यता का युग

बाद में जो लोग आये, उन्होंने भी कभी भारत की एकता के विषय में सन्देह न किया।

ईसा से पूर्व तीसरी सदी में भारत के सभी प्रान्तों में प्राकृत भाषा जानी समझी जाती थी।

देश में एक ही संस्कृति थी, इसको निरूपित करनेवाले रामायण और महाभारत महाग्रन्थ हैं। इन महाग्रन्थों का आस्वादन व अध्ययन, काश्मीर से कन्याकुमारी तक, सिन्धु से ब्रह्मपुत्र तक के सभी प्रान्त के वासियों ने किया। वेद और पुराण सभी के लिए आदरणीय थे। शिव और विष्णु की सर्वत्र आराधना होती थी।

ऐसे भारत देश के इतिहास के मुख्य अंशों को जानना सब के लिए आवश्यक है। और वांछनीय है।

* * *

हमारे देश के सब से अधिक प्राचीन लोग पूर्व-प्रस्तर युग के हैं। ये हमारे देश में कभी रहते थे, यह उनसे उपयुक्त प्रस्तर उपकरणों से ही जाना जा सकता है। इस प्रकार के उपकरण चिन्गलपेट जिला में अब भी कई जगह मिलते हैं।

प्रस्तर युग के उपयोग

इन प्रस्तर उपकरणों का उपयोग करनेवाले पशुओं की तरह जीवन यापन करते थे। न वह खेती करना जानते थे, न पात्र आदि बनाना ही।

नवीन प्रस्तर युग के लोग भारत के सभी भागों में रहा करते थे। इनके उपकरण भी बहुत-सी जगह पर मिलते हैं। बलारी के पास की गई खुदाई में तो इनका एक कारखाना-सा मिलता है। इस कारखाने में पत्थर के उपकरण बनाये जाते थे। यानि उन दिनों उपकरणों

के उत्पादन में बहुत-सी क्रमिक वृद्धि हो गई थी।

नवीन प्रस्तर युग के जन जीवन में और भी विकास हुआ। उन्होंने कृषि करना सीखा। कई तरह के खाद्य पदार्थ व फल पैदा करना वे सीख गये। पशुओं को पालना भी उन्होंने सीख लिया। पात्र बनाना भी वे जान गये। पहिले व इन्हें हाथ से बनाया करते। फिर चाक भी आया।

ये गुफाओं में रहते। गुफाओं की दीवारों पर शिकार से सम्बन्धित चित्र, अपने नृत्य के चित्र वे बनाया करते। इस तरह की गुफायें अब भी कई हैं। उन्होंने अपने पात्रों व आभूषणों पर रंग लगाना भी सीख लिया। नौकायें तैयार करके वे समुद्र में भी जाने लगे। कपास और ऊन से वे कपड़े भी बनाने लगे। वे मृतों को भूमि में गाड़ दिया करते।

इसके बाद लौह युग आता है। इस युग में पहिले ताम्बा उपयुक्त हुआ। फिर कांसा, और उसके बाद लोहा। भारत देश की सामाजिक प्रगति में "कांसे का युग" नहीं है। उत्तर भारत में कुछ दिन ताम्बे का उपयोग हुआ, फिर वहाँ भी लोहा इस्तेमाल होने लगा। दक्षिण भारत में लोगों ने सीधे प्रस्तर युग से ठीक लौह युग में प्रवेश किया।

भारत देश के इतिहास के लिखित श्लोक ऋग्वेद के समय से मिलते हैं। ऋग्वेद लौह युग में आविष्कृत हुआ। जब यह लिखा गया तब लोहा उपयोग में आ गया होगा। परन्तु ताम्र युग में ही सिन्धु घाटी में एक अद्‌भुत सभ्यता का उद्भव हुआ।

दक्ष-यज्ञ

चतुर्थ अध्याय

कैलास-शिखर अति दिव्य मनोहर
छूता था आकाश,
बिखर रहा था शशि का चहुँदिशि
शीतल विमल प्रकाश।

अप्सरायें थी शशि-किरणों की
साड़ी सुन्दर पहने,
विचर रही थी इधर-उधर वे
शोभा के क्या कहने!

पास वहीं बहती थी कलकल
गंगाजी की धारा,
लखते थे जल-दर्पण में मुख
जगमग चंदा तारा।

उसी समय सहसा नारद मुनि
उतरे नभ से क्लांत,
वीणा थी कर में, पर वह भी
थी बिल्कुल ही शांत।

मुनि की घबड़ायी-सी मुद्रा
औ' उखड़ी-सी चाल,
देख अप्सरायें भी भय से
हुई बहुत बेहाल।

दौड़ी वे सब मुनि के पीछे
बोलीं—क्या है बात,
सदा विहँसती थी जो मुख-छवि
उस पर क्यों व्याघात?"

किंतु न नारद बोले कुछ भी
चले तुरत उस ओर,
रजत शिखर पर शान्त विराजित
थे शंकर जिस ओर।

"भारतीभक्त"

निकट पहुँचने पर नारद ने
उनको किया प्रणाम,
जय-जयकार किया तब सबने
ले शंकर का नाम।

नारद मुनि को देख सामने
बोले शिव भगवान—
"आओ मुनिवर, कहो खोलकर
है क्यों यों मुख म्लान?"

नारद बोले—"कहूँ हाल क्या
भय में भोलेनाथ,
काँप रही जिह्वा है मेरी
चकराता है माथ!

अन्तर्यामी आप सदाशिव
बनते क्यों अनजान?
दक्ष-यज्ञ में घटी आज है
घटना अघट महान।

माता सती बनी राख हैं
आप यहाँ निश्चिंत
कैसा है यह खेल जगतपति
बैठे यों निर्लिप्त!"

नारद से इतना सुनते ही
शिव का आया रोष,
बदल गयी त्योरी पल भर में
किया विकटतम घोष।

नाग गले का लगा छोड़ने
रह-रहकर फूँकार,
खड़े हो गये शिव आँखों से
बरसाते अंगार।

बोले वे झट नारद से यों—
"कहो खुलासा हाल,
घटना कैसे घटी भला यह
आया किसका काल?"

नारद ने तब कहा—"दक्ष ही
है घटना का मूल,
बुरा-भला था कहा आपको
उसने निज को भूल।

सह न सकी तब सती आपका
लखकर यह अपमान,
भस्म हुई कुल-ज्वाला से वह
तत्क्षण गई समान।

गरजे तब गण सभी आपके
होकर क्रुद्ध अधीर,
यज्ञदेव की सेना पर झट
टूट पड़े वे वीर।

लेकिन भृगु की सेना भी थी
वहाँ दक्ष के साथ,
पिटकर भागे गण सब जिससे
त्राहि त्राहि कर नाथ!"

शिव ने सुन यह उग्ररूप हो
भरी क्रुद्ध हुंकार,
काँप उठा झट जिसको सुनकर
त्रस्त सकल संसार।

डम-डम गूँजा डमरू का स्वर
उठी धरा यह डोल,
ताण्डव शुरू किया शंकर ने
आँख तीसरी खोल।

बिखरी उनकी दीर्घ जटाएँ
घिरा गगन घनघोर,
बरसी आग उधर ही उनकी
फिरी नजर जिस ओर।

तन से उनके उतर धरा पर
फन फैलाये नाग,
लगे छोड़ने अपने मुखसे
कालकूट का झाग।

अट्टहास कर शिव ने भीषण
जटा उखाड़ी एक,
और उसे नीचे धरती पर
दिया तुरत ही फेंक।

उसी जटा से तत्क्षण निकला
पुरुष एक अति दिव्य,
जिसे देखकर लगता था ज्यों
शिव ही हो वह नव्य।

वीरभद्र था नाम पुरुष का
औ' थे हाथ सहस्र,
मुण्डमाल था गले विराजित
हाथों में नव शस्त्र।

पूछा उसने तत्क्षण शिव से—
"आज्ञा हो अब देव!
कैसी सेवा करूँ यहाँ मैं
आज आपकी देव?"

शंकर ने तब वीरभद्र को
दिया यही आदेश—
"यज्ञ दक्ष का करो ध्वंस अब
रखो न कुछ भी शेष!"

इतना कहकर शिव ने अपना
उसको दिया त्रिशूल,
और दिया आशीष कि उसको
मिले सफलता-मूल।

वीरभद्र ने फिर तो झटपट
किया उधर प्रस्थान,
नारद सब कुछ रहे देखते
सुर-मुनि सब हैरान।

[४]

[केशव विचित्र जन्तु पर सवार होकर पहाड़ पर भाग गया। वहाँ एक गुफ़ा में एक मान्त्रिक ने कालभैरव की मूर्ति दिखाई, उसकी आँखों में उसने जो घोर कलह जंगल में हो रहा था, वह भी दिखाया। केशव ने देखा कि कोई भयंकर चीज़, जिसका सिर मनुष्य की तरह था और जिसके चमगादड़ से पंख थे राज-सैनिकों को भगा रहा था। उसके बाद—]

उस भीकर आकृति को देखकर, जो राज-सैनिकों को डराकर, जंगल में इधर उधर भगा रही थी, केशव के आश्चर्य की सीमा न थी। उसने कभी न सुना था कि ऐसा भी कोई मनुष्य होगा, जिसके चमगादड़ से पंख होंगे या चमगादड़, जिसका मुख मनुष्य की तरह हो। परन्तु उसने स्वयं ऐसा विचित्र प्राणी अपनी आँखों देखा था। यह वास्तविकता है, अथवा मान्त्रिक ने अपनी मन्त्रशक्ति से कोई भ्रम पैदा किया है!

"वत्स केशव, देखी कालभैरव की शक्ति! अब तुम्हारे पिता पर कोई आपत्ति न आयेगी। राज-सैनिक बिना पीछे देखे ब्रह्मापुर भागे जा रहे हैं। मैंने तुमसे पहिले ही कहा था कि तुम्हारी और तुम्हारे

बहुत अच्छी जन्मपत्री है। तुम जो चाहोगे, वह होकर रहेगा। तुम महाराजा के लक्षण लेकर पैदा हुए हो।" उसने केशव की पीठ सहलाई। "फिर भी क्यों सन्देह रखा जाय! अभी क्यों न तय कर लिया जाये!" कहता वह गुफ़ा में से निकल गया।

मान्त्रिक को क्या देखकर इतनी खुशी हुई थी यह जानने के लिए केशव ने अपना कन्धा आगे करके ध्यान से देखा। वहाँ कोई तिल न था। निशान वगैरह भी न था। केशव ने सोचा, जो वह देख नहीं पा रहा था, सम्भव है, मान्त्रिक ने देख लिया हो।

वह यह सोच ही रहा था कि मान्त्रिक हाथ में कुछ पत्ते मलता, वहाँ आया। "वत्स, वह तिल तुम्हारी आँखों को नहीं दिखाई देगा। तुम इन पत्तों का रस लगाओ, तब तुम भी अपनी आँखों देख सकोगे।" यह कहकर उसने पत्तों का रस केशव के कन्धे पर लगाया।

रस के लगाते ही केशव के कन्धे पर काले साँप का चित्र-सा दिखाई दिया। उसको देखकर मान्त्रिक बड़ा खुश हुआ।

पिता की रक्षा का भार मुझ पर है। अब तुम अपने कन्धे पर के कपड़े को हटाओ। सन्देह निवारण कर ले।" मान्त्रिक ने कहा।

केशव के मन में मान्त्रिक के प्रति कृतज्ञता के भाव उठे। उसने विश्वास कर लिया कि मान्त्रिक ने उसके पिता की, राज-सैनिकों से रक्षा की थी। अब मान्त्रिक का कहना था कि उसने कन्धे पर से कपड़ा हटा दिया। मान्त्रिक ने केशव के कन्धे को अपलक देखा। "अहाहा, अहाहा वत्स, तुम भाग्यशाली हो। तुम्हारी

"वत्स केशव, अब कोई शक्ति नहीं है, जो हमारे वश में न आ सकती हो। कालभैरव, आदिभैरव, उन्मत्तभैरव सब हमारे घर में वास करने आ रहे हैं।" उसने कहा। ज़ोर से मन्त्र पढ़ते हुए कालभैरव की मूर्ति के सामने उसने साष्टाङ्ग किया। देखते देखते वह आराधना करता-करता समाधिस्थ-सा हो गया।

केशव यह देखता वहीं खड़ा रहा कि कब मान्त्रिक आँखें खोलता है। पन्द्रह मिनिट गुज़र गये, पर उसमें कोई चलन न दिखाई दिया। केशव को न मालूम क्यों सहसा भय हुआ। कहीं मान्त्रिक मुझे कालभैरव को बलि देने के लिए तो नहीं लाया है! यह सन्देह होते ही केशव अपने अस्त्रों को खोजने लगा। तलवार, बाण गुफा के द्वार पर उसको दिखाई दिये। केशव एक छलांग में वहाँ गया। उसने उनको लेना चाहा। इतने में उसको आवाज़ सुनाई दी। "ठहरो, केशव, जल्दबाज़ी न दिखाओ।" केशव ने सिर उठाकर आगे देखा। सामने करीब बीस वर्ष का युवक एक खड़ा दिखाई दिया।

"तुम कौन हो? यहाँ क्यों आये हो?" केशव ने चकित होकर पूछा।

"मैं, ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक का शिष्य हूँ। मैं कहीं से नहीं आया हूँ। मैं यहीं रहता हूँ।" युवक ने कहा।

"ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक कौन है?" केशव ने पूछा।

"अरे नादान! तुम इतना भी नहीं जानते।" कहते हुए युवक ने कालभैरव के सामने साष्टाङ्ग पड़े हुए मान्त्रिक को दिखाया।

"जानते हो, यकायक आकाश से तुम्हारे बिजली की तरह गिरने से मैं कितना

डर गया था।" केशव ने तलवार और बाणों को लेते हुए कहा।

"इतना डरना भी तुम छोड़ दो। नहीं तो, तुम आनेवाली आपत्ति का मुकाबला कैसे करोगे?" युवक ने पूछा।

"आनेवाली आपत्ति क्या है?" केशव ने आश्चर्यपूर्वक पूछा। उसे याद आया कि जबसे उसने उस विचित्र प्राणी को देखा था, तबसे वह आफतों में ही फँसता आया था। उसने विचित्र जन्तु के लिए चारों ओर घूमकर देखा। परन्तु वह कहीं दिखाई न दिया।

"क्या देख रहे हो?" युवक ने पूछा।

"मैं एक विचित्र जन्तु पर सवार होकर यहाँ आया था, मैं यह देख रहा हूँ कि वह कहाँ गया है।" केशव ने कहा।

युवक ने ज़ोर से हँसकर कहा—"वह विचित्र जन्तु मैं ही तो हूँ। मैंने बताया तो था कि मैं भाखदण्डी मान्त्रिक का शिष्य हूँ। मेरा नाम जयमल्ल है। क्योंकि मेरे कारण ही तुम पर इतनी आपत्तियाँ आई हैं इसलिए, मैं भरसक तुम्हारी रक्षा का प्रयत्न करूँगा।" जयमल्ल ने कहा।

जयमल्ल की बात सुनकर केशव ताड़ गया कि गुरु शिष्य में कुछ अनबन थी। उसने गुफा के अन्दर देखा। भाखदण्डी मान्त्रिक कालभैरव की मूर्ति के सामने बिना हिले डुले पड़ा हुआ था।

"वह ऐसी हालत में है कि हम चाहें कुछ भी बात करें, वह नहीं सुन सकता। वह भक्तिवश मूर्छित है। यदि हम न उठायेंगे, तो सूर्यास्त तक यों ही पड़ा रहेगा।" जयमल्ल ने कहा।

"हूँ, हाँ, तो तुम कह रहे थे कि मुझ पर कोई आपत्ति आनेवाली है, कहाँ से?"

केशव ने पूछा । जयमल ने प्राणदण्डी की ओर संकेत किया ।

"तो मैं अभी पहाड से उतरकर भाग जाऊँगा । मुझे कौन रोक सकता है !" केशव ने कहा ।

जयमल मुस्कराते हुए केशव को कन्धा पकड़कर गुफा के सामने से दूर ले गया । "जो एक बार प्राणदण्डी के हाथ आ जाता है, वह उससे बचकर नहीं निकल पाता । हम उसको बिना मारे यहाँ से नहीं निकल सकते ।"

"तो वह काम अभी कर दिया जाय ! अभी वह मूर्छित है ही, मैं उसको तलवार से मारे देता हूं ।" कहता केशव तलवार निकाल कर गुफा में गया ।

जयमल ने केशव का कन्धा पकड़कर रोकते हुए कहा—"जल्दी न करो, जब तक हम दोनों में मेल है, हम उसे कभी भी मार सकते हैं । अब तुम्हें क्या फायदा है, अगर तुम उसे मार भी दोगे ! यदि तुम पहाड से भाग भी गये, तो सैनिक तुम्हें शत्रु देश का गुप्तचर समझकर पकड़लेंगे । यह जानते हो न !"
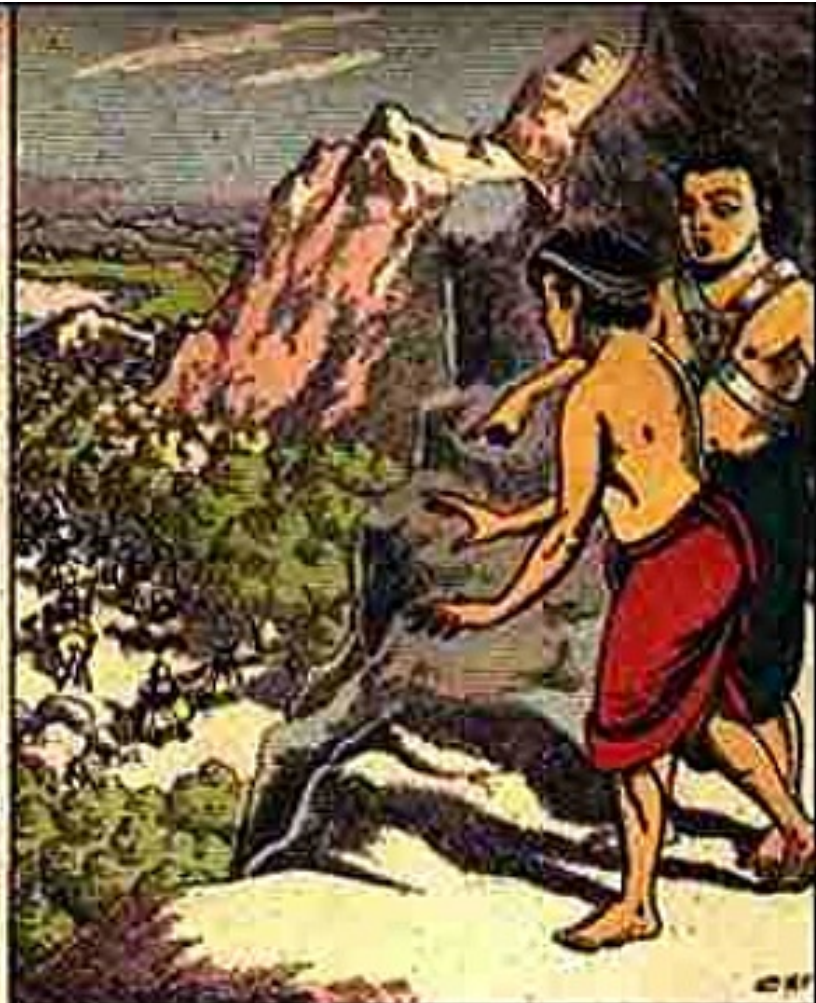
"राज-सैनिकों को, एक भयंकर आकृति ने, जिसका सिर मनुष्य का सा था और जिसके चमगादड़ से पंख थे, जंगल में से भगा जो दिया है !" केशव ने कहा ।

यह सुन जयमल जोर से हँसा । फिर वह केशव को साथ लेकर, एक ऊँचे प्रदेश की ओर गया और नीचे के प्रदेश की ओर दिखाते हुए उसने कहा—"जरा गौर से देखो । कितने सारे सैनिक, तुम्हारे लिए सारा जंगल छान रहे हैं ।"

केशव को सब कुछ विचित्र-सा मालूम हुआ । जयमल की बात में कुछ भी झूठ

न था। घोड़ों पर सवार हो, कई राज-सैनिक पेड़ों पर, झाड़ियों के आसपास खोज रहे थे। "यानि, जो कुछ मान्त्रिक ने कालभैरव के आँखों में दिखाया था, वह सब भ्रम था।" केशव ने अचरज में कहा।

"नहीं तो और क्या था! मुझे अद्भुत प्राणी बनाकर भेजा था, इसी मान्त्रिक ने। तुम्हें आफत में डालकर वह इस पहाड़ पर ले आया। मुझे उसकी इस काम में सहायता करनी ही पड़ी, तुम्हारे दायें कन्धे पर कालसर्प के आकार का तिल देखकर वह फूला न समाया। वह तेरे द्वारा उन शक्तियों को पा सकता है, जिनको पाने की वह इतने यत्नों से कोशिश कर रहा है। वह इसके लिए तुम्हारा उपयोग करने जा रहा है, जानते हो?" जयमल्ल ने कहा।

"कौन-सी हैं वे शक्तियाँ, उसके लिए वह कैसी परीक्षा लेने जा रहा है?" केशव ने कहा।

जयमल्ल मुस्कराया। कुछ देर तक केशव की ओर देखता रहा। फिर उसने उसके दोनों हाथ अपने हाथ में लेकर कहा—"केशव, आज से हम दोनों दोस्त हैं। कोई चीज़ हमारा स्नेह सम्बन्ध नहीं तोड़ सकती। तुम और मुझ पर भी इस ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक के कारण आपत्ति आनेवाली है। मगर यदि हम दोनों मिलकर रहे, तो वह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यही नहीं, जिन शक्तियों को वह पाने की कोशिश कर रहा है, हम ही उन शक्तियों को पा सकेंगे। वह तुम्हारा किस प्रकार उपयोग करने जा रहा है, यह बात...."

जयमल्ल अपना वाक्य अभी पूरा न कर पाया था कि पहाड़ में बिजली-सी कड़की।

विस्फोट-सा हुआ। फिर ऐसा लगा कि कोई किश्ती पानी में झकझोर दी गई हो।

इस विस्फोट के कारण बड़े बड़े पत्थर नीचे खिसकने लगे। केशव और जयमल जिन पत्थरों पर लदे थे, उन्हें छोड़कर भागे। इतने में गुफा के अन्दर से ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक चिल्लाता बाहर आया। जंगल की ओर देखते हुए उसने कहा—"हा.... हा....हा....कालभैरव की अपार शक्ति। मेरे मन्त्र का प्रभाव। पहाड़ ही हिलता-सा मालूम होता है। चाहूँ, तो मैं इसको आकाश में पक्षी की तरह उड़ा सकता हूँ। यह देखो, ये राज-सैनिक जो पहाड़ पर चढ़ना चाहते थे, कैसे हथेली में जान रखकर भागे जा रहे हैं। जादू भरे पत्थर उनका पीछा कर रहे हैं।"

केशव और जयमल ने पहाड़ की तलहटी में देखा। जैसा मान्त्रिक ने कहा था, राज-सैनिक घोड़ों पर सवार हो, और कुछ पैदल पहाड़ से भाग रहे थे और बड़े बड़े पत्थर इस तरह मैदान की ओर लुढ़क रहे थे जैसे कोई भयंकर भूकम्प आ गया हो। उसकी चोट में कुछ घुड़सवार कुछ पदाति पिस रहे थे।

केशव कुछ समय तक स्तब्ध-सा खड़ा रहा। वह भयंकर दृश्य देखकर सम्भला ही था कि ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक ने अट्टहास किया—"शिष्य, अपने केशव को दागोंवाले शेर की गुफा के सामनेवाले हाथियों के तालाब में स्नान कराकर लाओ। सूर्यास्त के बाद बहुत-से ऐसे काम हैं, जो हमें करने हैं।" उसने कहा।

(अभी है)

गार्दभ बुद्धि

किसी में गधे नहीं हुआ करते थे। एक बार एक बेकार आदमी किस्ती में एक गधा लाया और वहाँ पहाड़ों में उसे छोड़ गया। उस प्रान्त के एक शेर ने उस नये जन्तु को देखकर सोचा—"अरे यह भी कितना बड़ा जानवर है।" वह डर गया। पर उसने पास जाकर उसे देखने की सोची। इतने में गधा रेंकने लगा—"अरे भाई मरा।" शेर उसका रेंकना सुन घबरा गया और दूर भाग गया। पर शेर का डर यह सोच कम हुआ कि गधा उसका पीछा करके उसे मारने की कोशिश नहीं कर रहा था। शेर जान गया कि भले ही गधे का गरजना भयंकर हो, पर वह खतरनाक न था।

अब शेर बिना डर के गधे के पास आया। उससे परिचय करने लगा। शेर को अपने शरीर से रगड़ता, सहलाता देख, गधा गरमा गया और उसने दुलत्ती मारी।

"अरे बस, यही तो तुम कर सकते हो! अरे मैंने तो जाने क्या क्या सोचा था!" शेर यह सोच गधे पर लपका। उसको मारकर, उसे खाकर आराम से चला गया। गधे ने जो कुछ वह कर सकता था, वह करके ही शेर से आफत मोल ली थी।

बाल बाल बच गया

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतार कर कन्धे पर रख, हमेशा की तरह श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा तुमने मुश्किल काम करने की ही सोची है। परन्तु तुम एक बात नहीं सोच पाये। वह यह कि कई बार छोटे मोटे काम करना भी असम्भव हो जाता है। यदि तुम्हें मेरी इस बात पर विश्वास न हो, तो तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ। उसे सुनकर थोड़ी देर के लिए अपनी थकान भूल जाना।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक ज़माने में एक देश का एक राजा था। वह राजा यकायक मर गया। राजा के एक लड़का था। पर वह गोदी का था। वह लड़का, जो तब तक पालने में पड़ा पड़ा किलकारियाँ भर रहा था, तुरत उस देश का राजा हो गया।

बेताल कथाएँ

मृत राजा के एक भाई था। बड़े भाई के यकायक मर जाने से उसने स्वयं राजा बनना चाहा। क्योंकि भाई का छोटा-सा लड़का, उसके राजा बनने में अड़चन था, इसलिए उसने उस बच्चे को मारकर राजा होने का निश्चय किया। गोदी के नादान बच्चे को मरवाना उसे बड़ा आसान लगा।

राजा के भाई को, शिशु राजा को मरवाने के लिए एक परदेसी योद्धा मिला। उसने उस योद्धा को राजमहल में एक जगह छुपा दिया। फिर उसने बच्चे के कमरे में निशान कर दिया। उसकी दायी को और पहरा देनेवाले सैनिकों को पैसा देकर किसी काम पर भेज दिया। योद्धा के पास आकर कहा—"यदि तुम इस समय फलाने कमरे में गये, तो तुम्हें राजा अकेला मिलेगा। उसको मार आना। यह लो, यह रहा तुम्हारा ईनाम।" उसने उसके हाथ में बहुत-सा सोना रखा।

योद्धा तलवार लेकर उस कमरे में गया, जिसे राजा के भाई ने दिखाया था। वहाँ उसे राजा तो नहीं दिखाई दिया, पर उसने कालीन पर एक बच्चे को किसी फल से खेलते देखा। परदेशी योद्धा यह न जानता था कि वह बच्चा ही राजा था। जैसे ही योद्धा कमरे में घुसा, वैसे ही बच्चे के हाथ से वह फल वहाँ लुढ़क गया। बच्चे ने फल की ओर हाथ बढ़ाया। योद्धा की ओर देखकर वह चिल्लाया—"बो बो" योद्धा ने फल को बच्चे की ओर फेंक दिया। बच्चा तालियाँ बजाने लगा। योद्धा को देखकर हँसा। योद्धा वह काम भूल गया, जिसके लिए उसे भेजा गया था और वह मजे में बच्चे के साथ खेलने लगा। इतने में सैनिक आ गये और उन्होंने उस योद्धा को पकड़ लिया।

"मैं राजा के पास काम पर आया था, वे दिखाई ही न दिये। इस बच्चे को अकेला पा, मैं इसके साथ खेलने लगा।" योद्धा ने कहा। "राजा तो कभी के गुज़र गये, अब ये बच्चे ही राजा हैं।" सैनिकों ने कहा।

योद्धा चकित रह गया। "अच्छा, तो यह बात मैं मालिक को बताऊँगा।" क्योंकि वह सीधा सादा दिखाई पड़ रहा था राज सैनिकों ने उस योद्धा को जाने दिया। वह योद्धा भी फिर राजा के भाई को न देख सका, वह उस देश को छोड़कर एक और देश चला गया।

जब उसकी यह चाल न चली तो राजा के भाई ने एक और चाल चली। इस बार उसने कुछ चोरों को बुलाकर कहा— "फलाने दिन कुछ लोग, शहर के बाहर के मन्दिर में आयेंगे। तुम उस दिन रास्ते में कहीं छुपे रहना, पीछे से उन पर हमला करके, उनके पास जो कुछ हो लूट लेना। उन लोगों के साथ एक बच्चा होगा, उस बच्चे के शरीर पर बहुत-से कीमती गहने होंगे। अगर तुमने उन सब को लूट लिया तो तुम्हारी गरीबी जाती रहेगी। तुम औरों को मारो या न मारो, यह तुम्हारी मर्ज़ी, पर तुम इस बच्चे को जरूर मार देना।"

इस चाल के अनुसार वे निश्चित दिन मन्दिर में इकट्ठे हुए। फिर झाड़ी-पेड़ों के पीछे छुप छुप कर राजधानी की ओर निकल पड़े।

इस बीच, चोरों के एक और गिरोह ने उन लोगों पर हमला किया, जो शिशु राजा को मन्दिर की ओर ले जा रहे थे। उन्होंने उन के सिर काट दिये। जो कुछ उनको मिला, वे लेकर चले गये। उन्होंने शिशु राजा के आभूषण भी लूटे। क्योंकि वह बच्चा किसी से कुछ कह नहीं

सकता था इसलिए उन्होंने उसे मारा नहीं। उसे रास्ते में ही छोड़कर चले गये।

शिशु राजा के साथ जो लोग आये थे उन में से एक दासी ही जान बचाकर भाग सकी। औरों के चले जाने के बाद वह फिर आयी। शिशु राजा को रास्ते में जीवित पा, वह उसको लेकर अपने घर चली गई। इस तरह वह बच्चा एक और आफत से बच निकला।

अपने दोनों प्रयत्नों को असफल पा राजा के भाई ने रसोइये को खूब घूँस दी। उससे उसने शिशु राजा के दूध में जहर मिलाने के लिए कहा। धन के लालच में वह नीच रसोइया, यह नीच काम करने के लिए मान गया। उसने एक लोटे में दूध डालकर उस में जहर मिलाकर शिशु को दिया। शिशु लोटा मुख पर लगानेवाला था कि किसी दासी ने छींका। उसका छींकना सुन शिशु के हाथ से लोटा गिर गया। जहरीला दूध फर्श पर जा गिरा।

राजा के भाई का तीसरा प्रयत्न भी सफल न हुआ। न जाने वह और कौन कौन सी चालें चलता, पर इतने में उसके शत्रुओं में से किसी ने उसकी हत्या कर दी।

इसलिए शिशु राजा निर्विघ्न रूप से बड़ा हो गया। उसका पट्टाभिषेक हुआ। उसने सुखपूर्वक राज्य किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा, मुझे एक ही सन्देह है। राजा का छोटा-सा लड़का था, उसे मारने के लिए किसी खास बड़ी चीज़ की ज़रूरत न थी। राजा का भाई दुष्ट था। उसे पाप का भी भय न था। हत्या करने का उसने निश्चय कर लिया था। राजा होने के लिए वह उतावला हो रहा था। फिर भी वह उस छोटे से बच्चे को क्यों न मार सका? उसने तीन बार प्रयत्न किया, और वह तीनों बार असफल रहा, क्यों? यदि तुमने जानबूझकर इन प्रश्नों का उत्तर न दिया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"शिशु का छोटापन ही उसकी रक्षा का कारण था। उन रत्नों को ही लोग चुराते हैं, जिन्हें हम सुरक्षित रखना चाहते हैं, मामूली पत्थरों को कोई नहीं चुराता। रथ के चक्र के नीचे, बड़े बड़े पत्थर चूर चूर हो जाते हैं, पर रेत का कुछ नहीं होता। तूफ़ान में बड़े बड़े पेड़ गिर जाते हैं, पर घास का कुछ नहीं बिगड़ता। क्योंकि वह छोटा था, नादान था, इसलिए उस लड़के का कोई कुछ न कर सका। उस पर कोई आपत्ति न आई।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और जाकर फिर पेड़ पर बैठ गया।

(कल्पित)

खलीफ़ा की आँख खुली

[२]

अबुल कासीम के दिये हुए उपहार लेकर खलीफा को चुपचाप बगदाद चले आना बिल्कुल न भाया। उसके मन में बहुत से सन्देह उठने लगे। यह युवक कौन है! जो इतने अमूल्य उपहार मेहमानों को देते नहीं हिचकता, उसके पास किस तरह की सम्पत्ति होगी! भले ही कितनी ही सम्पत्ति हो, इस जैसे के हाथ में उसके काफ़ूर होते कितनी देर लगती है! फिर वह काफ़ूर क्यों नहीं हुई!

इस कासीम के बारे में, हो न हो, कोई बड़ा भेद है। खलीफा ने इस भेद को मालूम करना चाहा। वह कासीम की दी हुई चीजें लेकर उसके घर गया।

उसने कासीम से कहा—"आपने जो उपहार भेजे हैं, ये बहुमूल्य हैं। इसलिए मैं उन्हें स्वीकार नहीं कर पा रहा हूँ। आप इन्हें वापिस ले लीजिये। आपकी शान, उदारता, सचमुच अतुल्य है।"

इस बात पर कासीम को कुछ दुख हुआ—"हुज़ूर, क्या मेरे आतिथ्य में कुछ कमी रह गई थी! या मेरे उपहार आपकी हैसियत के मुताबिक न थे। नहीं तो मेरा अपमान करने के लिए आप सराय से यों काम पर न आते!"

"नहीं, नहीं, आप इस तरह हरगिज न सोचिये। मैं उतना खराब नहीं हूँ कि आतिथ्य देनेवाला का ही अपमान करूँ।

अशोक कुमार

मुझे बस यही चिन्ता सता रही है कि आपको इतनी कीमती चीज़ों से क्यों वंचित करूँ, जो आपने मुझे यूँ ही उपहार में दे दी हैं।" खलीफ़ा ने कहा।

कासीम कुछ सकुचाया—"यदि आप इस सन्देह को लेकर ही फिर मेरे घर को पवित्र करने आये हैं, तो उस सन्देह को आप छोड़ सकते हैं। जो कोई मेरे घर अतिथि बनकर आये हैं, मैंने उन सब को ऐसे ही उपहार दिये हैं। अल्लाह की मेहरबानी से जो कुछ सम्पत्ति मेरे पास है वह कभी कम नहीं हो सकती। यदि आपने मेरी कहानी सुनी, तो आपको ही मेरी बात मालूम हो जायेगी।" यह कहकर उसने अपनी सारी कहानी सुनाई।

कैरो शहर में अब्दुल अजीज़ नाम का एक प्रसिद्ध जौहरी रहा करता था। कई पीढ़ियों से उसके पुरखे कैरो शहर में रहते आये थे, परन्तु कैरो के सुल्तान की नज़र उसके धन दौलत पर पड़ी। इसलिए उसे कैरो से भागना पड़ा। वह बसरा में आकर बस गया। वहाँ उसने एक श्रेष्ठ व्यापारी की लड़की के साथ विवाह किया। उनके एक ही लड़का हुआ। उसका नाम अबू अल कासीम था।

कासीम अभी छोटा था कि उसके माता पिता गुज़र गये। उसे वसीयत में बहुत-सी ज़मीन जायदाद मिली थी, पर उसने अनजाने सारी दौलत बरबाद कर दी। दो साल में वह भिखारी हो गया। वह इतना शर्मिन्दा हुआ कि उस गरीबी में वह बसरा में न रह सका। जगह जगह वह घूमने लगा। घूमता घूमता वह अपने पुरखों के शहर कैरो में पहुँचा। उसे यह जान बड़ा दुख हुआ कि जिस शहर में उसके पिता ने रईसी के दिन

फाटे थे, वह भिखारी होकर मारा मारा फिर रहा था। इसी दुख में नील नदी के किनारे सुल्तान के महल के पीछे जा रहा था कि उसको ऊपर की मँजिल पर एक चन्दा-सा मुख दिखाई दिया और फिर अदृश्य-सा हो गया। ज्योंही कासीम ने उसको देखा, वह अपने कष्ट भूल गया। यह सोच कि फिर वह दिखाई देगी, वह अन्धेरा होने तक वहीं घूमता रहा, आखिर निराश होकर वह उस सराय में गया, जहाँ वह ठहरा हुआ था। अगले दिन फिर वह महल के पास गया और फिर उस खिड़की की ओर देखने लगा। लेकिन वह मुख न दिखाई दिया। पर उसे ऐसा लगा, जैसे किसी ने खिड़की का परदा हटाया हो और उसे देखा हो। कासीम तीसरे दिन फिर वहीं गया और फिर उस खिड़की की ओर देखता खड़ा रहा। उस दिन शाम को उस स्त्री ने अपना सुन्दर मुँह, परदा हटाकर दिखाया। "ऐ सुन्दरी, न मालूम मेरा भाग्य भी क्या है कि जब इस शहर में आया तो तुम्हारे दर्शन हुए, नहीं मालूम कि मुझे मेरा खोया हुआ भाग्य फिर मिलेगा कि नहीं!" उसने कहा।

यह सुन वह स्त्री घबराई हुई-सी लगी। कासीम ने भी भाग जाना चाहा। परन्तु साहस करके वह वहीं खड़ा रहा। साहस का परिणाम भी अच्छा रहा। उसने खिड़की से बाहर झुककर धीमे से कहा—"आधी रात के समय आओ, अब चले जाओ।" फिर उसका मुँह अदृश्य हो गया।

यह सोचता कि उस जैसा किस्मतवाला कोई न होगा, उस स्नानशाला में नहाने गया, जहाँ गरीब नहाया करते थे। वहाँ उसने स्नान किया। वह चमचमाते कपड़े पहिन आधी रात के समय राजमहल की खिड़की के पास आया। खिड़की में से रस्सी की सीढ़ी नीचे लटक रही थी। निडर हो, कासीम उस सीढ़ी पर से चढ़कर एक अन्धेरे कमरे में गया, उस कमरे के बाद एक और कमरा था, जिसमें एक दीया टिम टिमा रहा था, उस कमरे में उसे वह सुन्दरी दिखाई दी।

दोनों में इस तरह बातचीत हुई, जैसे बहुत पुरानी जान पहिचान हो। कासीम ने जब अपनी सारी कहानी सुनाई, तो उसने बताया—"मेरा नाम लबीबा है। सुल्तान ने मुझसे विवाह किया है। परन्तु मैं सुखी नहीं हूँ। सब मुझसे ईर्ष्या करते हैं। सब मुझे खतम करने का मौका देख रहे हैं।"

ये यों बातें कर रहे थे कि किसीने आकर उस कमरे के किवाड़ खटखटाये।

"सिवाय सुल्तान के मेरे कमरे के किवाड़ कोई नहीं खटखटाता। किसी ने हमें पकड़वा दिया है।" लबीबा ने कहा।

हुआ भी यही था, सुल्तान के महल के बीस हिजड़े कमरे में आये। कासीम को पकड़कर, ले जाकर उन्होंने एक खिड़की में से उसे नील नदी में फेंक दिया। उसने देखा कि एक और खिड़की से लबीबा को नदी में फेंका जा रहा था।
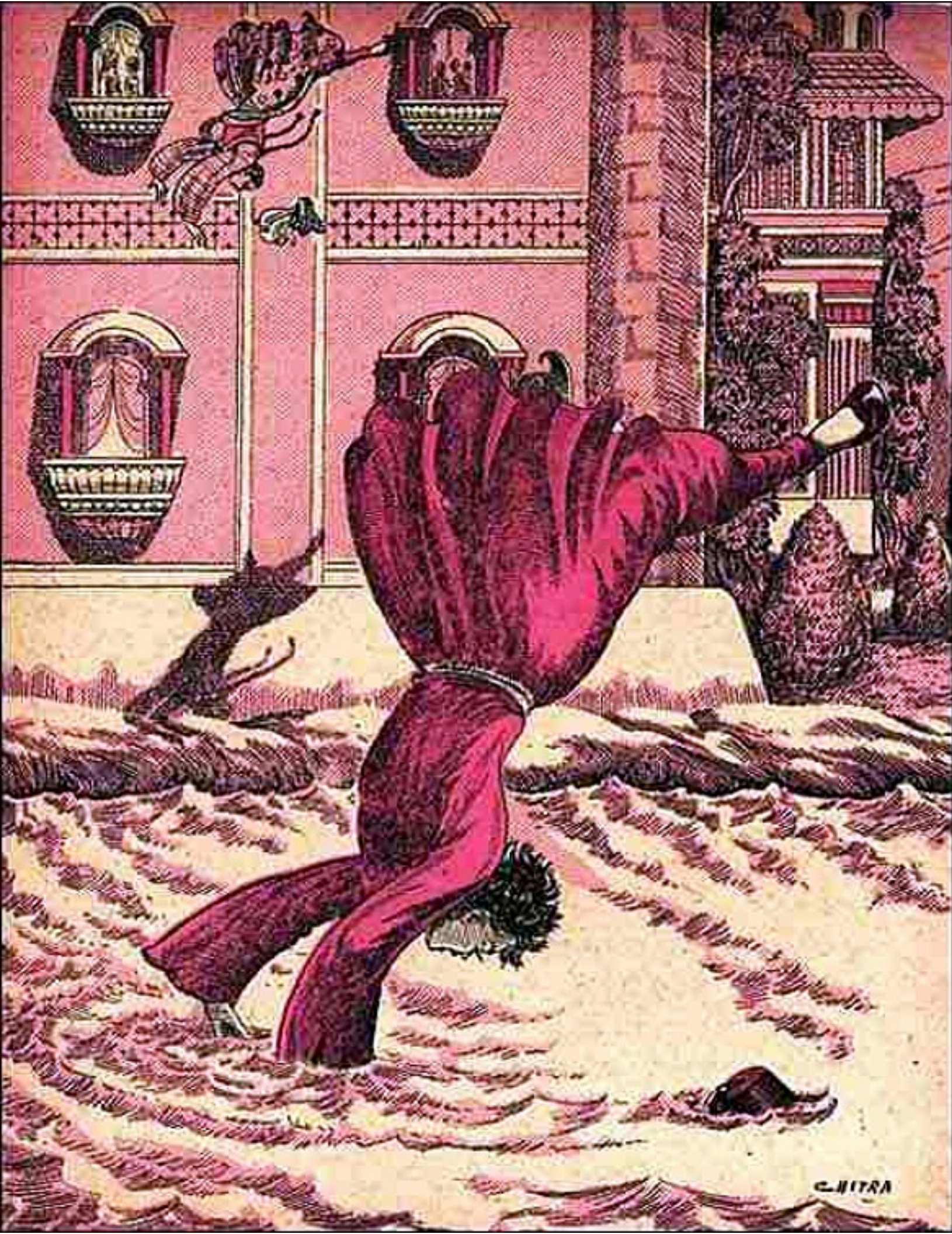
सौभाग्यवश कासीम तैरना जानता था। उस अभागिन के शरीर को, जिसने उससे प्रेम किया था, बहुत खोजा, डुबकियाँ मारी, पर वह कहीं न मिली। उसी दिन उसने कैरो नगर छोड़ दिया। थोड़े दिनों बाद वह बगदाद शहर पहुँचा। तब उसके पास एक दीनार ही रह गई थी, उससे उसने मिठाई, फल सुगन्ध पदार्थ आदि खरीदे। उन्हें गली में बेचने निकला। वह औरों की तरह न चिल्लाकर, गाता गाता बेचता। क्योंकि वह अच्छी तरह गा सकता था, इसलिए उसका माल जल्दी ही बिक गया।

एक दिन जब कासीम गलियों में गाता, अपना माल बेचता जा रहा था कि नगर के सबसे बड़ी दुकान के बूढ़े मालिक ने उसे बुलाया। उससे एक फल खरीदा। उसको बिठाकर पता-ठिकाना पूछा।

"क्यों मेरे ज़ख्म कुरेदते हैं!" कासीन ने दीन स्वर में पूछा।

बूढ़े ने वह प्रश्न छोड़ दिया। उसने उसके माल के बारे में पूछा ताछा। दस दीनारें हाथ में रखकर उसे भेज दिया।

अगले दिन कासीम जब उस तरफ़ जा रहा था, तो बूढ़े ने उसके पास से कुछ खरीदा, पास बिठाकर उससे फिर पता ठिकाना पूछा। जब वह इतनी बार पूछ रहा था तो उसे बताना ही पड़ा।

कासीम की कहानी सुनकर उसने कहा—"अब्दुल अज़ीज़ से अधिक अमीर तुम्हारा पिता होने जा रहा है। मैं तुम्हें गोदी लेने जा रहा हूँ। मेरे बच्चे नहीं हैं और अब होंगे भी नहीं। तुम बड़े अक़्लमन्द जान पड़ते हो, अब तुम अपनी दिक़्क़तें खतम समझो।" बूढ़े ने कहा।

उसने कासीम के हाथ में जो माल था, उसे दूर फेंक दिया। दुकान बन्द कर दी।

कासीम को लेकर वह घर चला गया। "हम कल बसरा जायेंगे। वहीं आराम से रहेंगे। मेरी अपनी जगह भी वहीं है।" उसने कासीम से कहा।

बसरा में एक साल हम आराम से रहे। फिर बुढ़ा बीमार हो गया। हकीमों ने कहा कि उसकी बीमारी का इलाज नहीं हो सकता था। तब उसने कासीम को अपने पास बुलाकर कहा—"बेटा! तुम्हारे कारण मैंने एक साल तक पुत्र प्रेम पाया, इसके लिए मैं तुम्हें बेशुमार धन दौलत देने जा रहा हूँ। इतनी सम्पत्ति संसार में किसी सम्राट या महाराजा के पास भी न होगी। यह सम्पत्ति हमारे वंश में अनादि काल से चली आ रही है। इसका रहस्य हमारे बाबा से मेरे पिता ने मालूम किया, और मैंने अपने पिता से जाना। और मैं तुम्हें बताता हूँ।" कह कर उसने वह स्थल बताया, जहाँ अनन्त निधि थी। फिर कासीम से उसने कहा—"निस्संकोच यह खर्चो। चाहे, तुम जितना खर्चो यह सम्पत्ति कम न होगी। समस्त सुखों का निश्चित हो भोग करो।"

ये बातें कहकर बूढ़े ने आँखें मूँद लीं। कासीम ने अपने पोषक पिता की अन्त्येष्टि क्रिया की। फिर वह उस सम्पत्ति का पूर्णतः उपयोग करने लगा, जो उसको यों आकस्मिक रूप से मिली थी। जो उसे पहिले जानते थे उन्होंने सोचा कि वह फिर एक दो साल में भिखारी हो जायेगा। परन्तु इस बार ऐसा न हुआ। और तो और उसका खर्च दिन प्रति दिन बढ़ता जाता था। जो कोई बसरा आता कासीम उसका आतिथ्य करता उसका राजोचित सत्कार करता।

नगर के अधिकारियों को भी मालूम हुआ कि कासीम के पास बहुत-सी सम्पत्ति आ गई थी। वे सब घूँस के लिए हाथ

पसारने लगे। जिस जिसने जितना माँगा, उतना उसने उनको दिया। कई के लिए हर रोज़ भत्ते का भी इन्तज़ाम किया। इससे उसका धन कुछ कम न हुआ। और लोगों का दबाव अवश्य कम हो गया।

सब सुनने के बाद खलीफ़ा को कासीम की निधि देखने की विकट इच्छा हुई। उसने कासीम से कहा—"मुझे यह विश्वास नहीं हो रहा है कि ऐसा भी कोई खज़ाना हो सकता है, जिसमें से इतना कुछ लेने पर भी वह सुरक्षित बना रहता है। जब तक मैं अपनी आँखों यह नहीं देख लेता, तब तक विश्वास न होगा। यदि आपने मेरी यह इच्छा पूरी कर दी, तो मैं वचन देता हूँ कि मैं इसके बारे में किसी को न कहूँगा।" उसने कहा।

"सच कहा जाय तो मुझे आपकी इच्छा पूरी नहीं करनी चाहिए। पर मुझे अपने अतिथि को असन्तुष्ट भेजना बिल्कुल पसन्द नहीं है। यदि आपको आँखों पर पट्टी बाँधकर मेरे साथ आना मंजूर हो तो मैं वह खज़ाना दिखाऊँगा।" कासीम ने कहा।

खलीफ़ा ऐसा करने के लिए मान गया। कासीम उसकी आँखों में पट्टी बाँधकर ले गया। वे दोनों तंग रास्तों से बहुत देर तक, बहुत दूर तक चलते रहे। बहुत-से मोड़ों से गुज़रे। फिर कई सीढ़ियाँ उतर कर बहुत नीचे गये। जब कासीम ने खलीफ़ा की आँखें खोलीं तो उसकी आँखें चौंधियाँ गईं। वे एक विशाल भवन में थे। उसकी दीवारों और छत पर सूर्यकान्त मणियाँ जड़ी हुई थीं। भवन के बीचों बीच संगमरमर का बना एक गढ़ा था। उसमें सोने की मुहरें भरी थीं। गढ़े के किनारे, सोने की ईंटों में हीरे लगाकर बनाई हुई बारह मूर्तियाँ थीं।

कासीम, खलीफ़ा को उस गढ़े के पास ले गया। उसने उससे कहा—"इस गढ़े की तह कहीं नहीं है। हमारे पुरखों ने जी भरके खर्च किया, पर इस गढ़े में केवल आधा अंगुल ही सोना कम हुआ।" इसके बाद वह खलीफ़ा को एक और भवन में ले गया। उसमें एक और चौड़ा गढ़ा था। उसमें हीरे मोती भरे पड़े थे। इसके चारों ओर असंख्य मयूरवाले वृक्ष थे। इसी तरह का एक वृक्ष उसने खलीफ़ा को उपहार में दिया।

इस तरह के कई भवनों में कासीम, खलीफ़ा को ले गया। फिर आँखों की पट्टी हटाकर वह उसे घर ले आया। खलीफ़ा ने उससे कहा—"आप तो बहुत मज़े में रह रहे होंगे। आपके यहाँ तो सभी देशों की स्त्रियाँ होंगी।"

कासीम ने लम्बा साँस छोड़कर कहा—"मेरा स्त्रियों से कोई सम्बन्ध नहीं है। नील नदी में जो मेरी प्रेमिका डूब गई थी, उसके समान इनमें कोई नहीं है। उसको मैं अपनी सारी सम्पत्ति दे सकता हूँ।" उसने कहा।

"ऐसे दुःख को, जो कुछ सुख प्राप्त हैं, उनसे ढक देना चाहिए।" खलीफ़ा ने

सलाह दी। पर मन ही मन कासीम को इस बात पर बड़ा खेद हुआ। वह कासीम से विदा लेकर बगदाद वापिस आ गया। वापिस आते ही उसने जाफर का सम्मान किया। जाफर को सब कुछ बता देने के बाद उसने उससे कहा—"मैं नहीं जानता कि मैं इस युवक का कैसे प्रत्युपकार कर सकूँगा।"

"उसे बसरा का राजा बनाइये।" जाफ़र ने कहा।

"तुम स्वयं जाकर उसे हमारा फर्मान दो। और इसे यहाँ लाओ। मैं खुद पट्टाभिषेक करवाऊँगा।" खलीफ़ा ने कहा।

जाफ़र कासीम को लाया। खलीफ़ा ने स्वयं जाकर उसका स्वागत किया। उसके प्रति उसने अपने लड़के से भी अधिक प्रेम दिखाया। इसके बाद वह कासीम को स्वयं स्नानशाला में ले गया। किसी को इस प्रकार ले आना खलीफ़ा के लिए यह पहिली बार था।

वे अब दोनों नहा रहे थे तो उस समय गाने के लिए एक नई गुलाम लड़की आई। उसको देखते ही कासीम चिल्लाया और फिर मूर्छित हो गिर गया, क्योंकि वह लबीबा थी। उसको एक मछियारे ने नील नदी में डूबने से बचाया, उसको उसने गुलाम बनाकर बेच दिया। उसके खरीददार ने हाल ही में उसे खलीफ़ा के महल में बेचा था।

इस तरह कासीम अपनी प्रेमिका को आखिर मिल सका। वह फिर से रानी बनी। उससे विवाह करके कासीम बहुत समय तक सुख पूर्वक जीवित रहा।

देवयानी की कथा

शुक्र का जन्म भृगुवंश में हुआ था। वह तपस्वी और विद्वान था। दैत्य और दानव उसको अपना गुरु समझते थे। दानव राजा वृषपर्व के नगर में शुक्राचार्य अपनी लड़की देवयानी के साथ रहा करता। प्रायः देवता और दानवों में युद्ध हुआ करता। युद्ध में जो दानव मर जाया करते उनको शुक्राचार्य जीवित किया करता। उसके पास मृत संजीविनी मन्त्र था। इस मन्त्र से मृतों को जीवित किया जा सकता था।

देवताओं का गुरु बृहस्पति था। वह मृतसंजीवनी मन्त्र नहीं जानता था। इसलिए जो देवता मर जाते उनको जिलाया नहीं जा सकता था। यह देवताओं के लिए एक विकट समस्या बन गई। उन्होंने सोच विचार कर एक उपाय सोच निकाला। बृहस्पति ने अपने पुत्र कच से कहा—"बेटा, तुम जाओ, शुक्राचार्य के शिष्य बनो। जैसे भी हो, उससे मृत संजीवनी मन्त्र सीखो। सेवा शुश्रूषा से उसको मनाओ। उसकी लड़की देवयानी को भी खुश करो, नहीं तो सम्भव है कि हमारा कार्य न हो सके।"

कच इसके लिए मान गया और वृषपर्व के नगर गया। शुक्राचार्य के दर्शन करके उसने उसको नमस्कार किया। उसने कहा कि वह बृहस्पति का पुत्र था और उनके पास शिष्यत्व के लिए आया था। शुक्र को बड़ा सन्तोष हुआ कि देवताओं के गुरु का पुत्र उनको गुरु स्वीकार करने आया था। कच शुक्राचार्य के घर ही रहने लगा।

एक दिन कच अपने गुरु की होम गौओं को चराने के लिए जंगल में ले गया। कुछ देर उसने समिधायें इकट्ठी कीं। जब वह थक गया तो बड़ के पेड़ के नीचे बैठ गया। उस समय कुछ दानव उस तरफ़ आये। उन्होंने कच को देखकर पूछा—"तुम कौन हो?"

"मैं बृहस्पति का लड़का हूँ। शुक्राचार्य के यहाँ शिष्य के रूप में रह रहा हूँ।" कच ने उनसे कहा। यह सुन दानव गरमा उठे। "यह हमारे गुरु के पास मृत संजीविनी मन्त्र जानने के लिए आया है।" उन्होंने यह सोच कच को मार दिया। उसके शरीर के टुकड़े टुकड़े कर दिये। उसे भेड़ियों को खिलाकर वे अपने घर चले गये।

शाम हो गई। होम गौवें रोज़ की तरह घर चली गईं। कच का कहीं पता न था। देवयानी तब तक उसको चाहने लगी थी। उसने पिता के पास आकर कहा—"पिता जी, हवन का समय हो गया है, पर कच अभी नहीं आया है। कहीं किसी जन्तु ने खा तो नहीं लिया, किसी दानव ने मार तो नहीं दिया!"

शुक्र दिव्यदृष्टि से कच की मृत्यु के बारे में जान गया। उसने मृतसंजीवनी मन्त्र का उपयोग किया। तुरत कच जीवित हो गया। भेड़ियों के पेट से बाहर निकला और घर पहुँचा। देवयानी ने उससे पूछा कि इतनी देर क्यों हो गई थी। उसने कहा कि दानवों ने उसको मार दिया था और मृतसंजीवनी के प्रभाव से जीवित होकर वह आया था।

एक दिन देवयानी ने कच को जंगल से फूल तोड़कर लाने के लिए कहा। वहाँ उसे फिर दानव दिखाई दिये। उसे

मारकर उसका चूर्ण बनाकर उन्होंने उसे समुद्र में मिला दिया।

देवयानी ने उसको पिता से कहकर पुनः जीवित करवाया। परन्तु दानव कच के पीछे लगे हुए थे। जब तीसरी बार जंगल में वह फूल लेने के लिए गया तो उन्होंने उसे फिर मार दिया। उसे जलाकर राख कर दिया। राख मदिरा में मिलाकर शुक्राचार्य को पिला दी। जब कच बहुत देर तक न आया तो देवयानी ने सोचा कि उसको फिर दानवों ने मार दिया होगा। वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। शुक्र ने उससे कहा—"अब तुम कच के विषय में शोक न करो। दानव उससे बदला ले रहे हैं। उनको यह असह्य है कि जिस संजीविनी मन्त्र से वे जीवित होते हैं, उससे कच भी जीवित हो।"

देवयानी ने हठ किया कि कच को जीवित किया जाय। उसने कहा कि यदि उसे जीवित न किया गया तो भोजन छोड़कर मर जाऊँगी।

मैंने उसे कई बार जिलाया, पर दानवों ने उसे हर बार मार दिया। यदि मैं
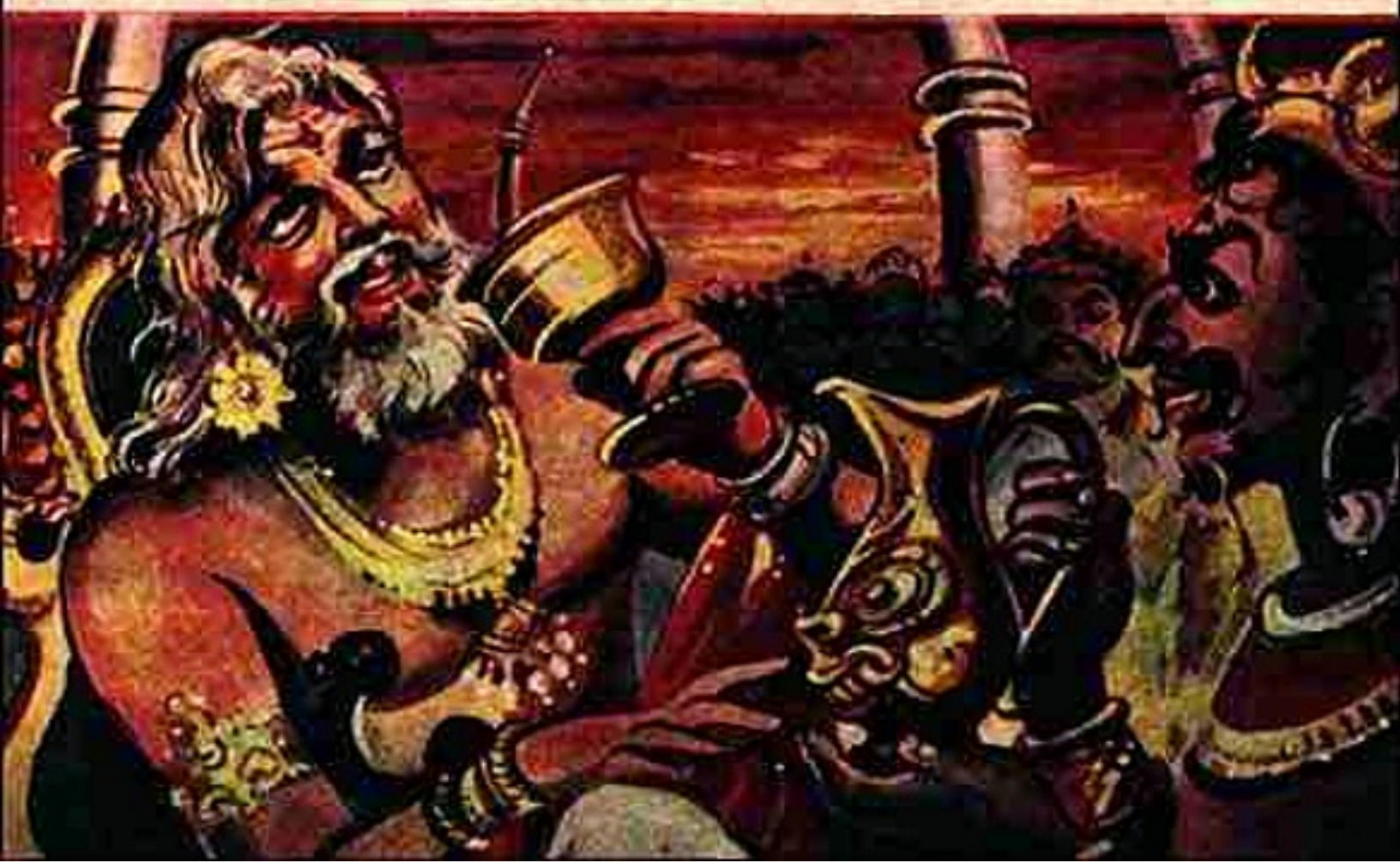
जिलाऊँगा भी तो ये उसे फिर मार देंगे। वे मेरे शिष्य हैं, मैं उन पर क्रुद्ध भी नहीं हो सकता।" कहकर शुक्र ने मृत संजीवनी का उपयोग किया। उसके प्रभाव से कच पुनः जीवित हो उठा। वह शुक्राचार्य के पेट में से चिल्लाया—"मैं आपके पेट में हूँ। अगर बाहर निकलता हूँ, तो आप पर आपत्ति आ सकती है। अब क्या किया जाय?"

"जब तक मेरा पेट फाटा नहीं जाता तब तक तुम बाहर नहीं निकल सकते। यदि पेट काटकर तुम बाहर निकाले गये, तो मेरी मृत्यु होकर रहेगी। देवयानी तुम्हारी मृत्यु पर जितनी दुखी होगी, उतनी ही मेरी मृत्यु पर भी होगी। इसलिए मैं तुम्हें मृतसंजीवनी मन्त्र का उपयोग बताता हूँ, उसके प्रभाव से मुझे जीवित कर देना।" शुक्राचार्य ने कहा।

कच मृतसंजीवनी मन्त्र का उपदेश पाकर शुक्राचार्य के पेट को चीरकर बाहर आया और फिर उसने शुक्राचार्य को जीवित कर दिया। इस घटना के बाद शुक्राचार्य ने मद्यपान निषिद्ध कर दिया।

वह जिस काम पर आया था, वह हो गया था। वह वहाँ कुछ दिन और रहा, फिर अपने घर के लिए निकल पड़ा। तब देवयानी ने उससे कहा—"जब जब दानवों ने तुम्हें मारा, तब तब मैंने तुमको जीवित करवाया। इसलिए तुम अवश्य मुझ से विवाह कर लो।"

"अरे, तुम तो गुरु पुत्री हो। बहिन के समान हो।" कच ने कहा।

तब देवयानी ने क्रुद्ध होकर शाप दिया। "ओ संजीवनी मन्त्र, तुमने मेरे पिता से पाया है, वह तुम्हारे पास निष्प्रभाव हो जाये।"

"तुम्हें कोई ब्राह्मण कभी न विवाह करे" कच देवयानी को शाप देकर स्वर्ग वापिस चला गया। उसने मृतसंजीवनी मन्त्र देवताओं को बताया। उसके बाद देवताओं में जो कोई मरता, उसको फिर जिला दिया जाता।

वृषपर्व की शर्मिष्ठा नाम की एक लड़की थी। वह हजार सहेलियों और देवयानी को साथ लेकर वन में भ्रमण के लिए गई। वहाँ उन्होंने एक पोखर में स्नान करने की सोची। वे अपने कपड़ों को किनारे पर रखकर पोखर में उतरीं। जब वे जलक्रीड़ा करके बाहर निकलीं तो हवा के कारण सब के कपड़े मिल जुल गये। एक दूसरे से पहिले कपड़े पहिनने की होड़ में शर्मिष्टा ने देवयानी की साड़ी पहिन ली। देवयानी के लिए शर्मिष्टा की ही साड़ी रह गई थी।

"अरे राक्षसी! मैं ब्राह्मण स्त्री हूँ। मैं तुम्हारे गुरु की लड़की हूँ। तुम्हारी साड़ी मैं कैसे पहिनूँ।" वह शर्मिष्टा से झगड़ने लगी।

"अरे भिखारिन! तुम्हारा पिता तो जो कुछ मेरे पिता देते हैं उस पर बसर करते हैं। फिर तुम्हें इतना घमंड! मेरी साड़ी भला तुम क्यों नहीं पहिनोगी!" कहकर, शर्मिष्टा ने देवयानी को पासवाले कुँये में धकेल दिया। और अपनी सहेलियों के साथ वह अपने घर चली गई।

देवयानी कुँये में गिरकर मरी नहीं। उस समय चन्द्रवंश का राजा, ययाति वहाँ शिकार पर आया हुआ था। उसे प्यास लगी। प्यास बुझाने के लिए जब वह कुँये के पास आया, तो उसमें उसने देवयानी को देखा। उसने अपने दायें हाथ से उसका दायाँ हाथ पकड़कर ऊपर निकाला। फिर वह अपने नगर चला गया। इतने में घार्णिक नाम की एक सेविका उस तरफ़ आई। देवयानी ने उससे कहा—"तुम

जाकर मेरे पिता से कहो कि मैं यहाँ हूँ और मैं वृषपर्व के नगर में कदम भी न रखूँगी ।"

जल्दी ही शुक्र उस जगह आया । "बेटी, तुमने शर्मिष्ठा को क्या कहा था ! वह यूँ ही तुम्हें क्यों तंग करती !"

"पिताजी, शर्मिष्ठा ने कहा कि मैं भिखारिन की लड़की हूँ । यदि यह बात सच हो, तो मैं अभी जाकर उसके पैर पकड़ूँगी ।" देवयानी ने कहा ।

"बेटी, तुम किसकी लड़की हो, यह सारा संसार जानता है । वृषपर्व भी जानता है । हमें क्रोध शोभा नहीं देता । शर्मिष्ठा राजा की लड़की है, तिस पर नादान है । आओ । चलें ।" शुक्राचार्य ने कहा ।

"जो मेरी परवाह ही नहीं करे, उसके पास रहने से तो यही अच्छा है कि मैं कहीं जा मरूँ । मैं नगर नहीं आऊँगी ।" देवयानी ने कहा ।

"बेटी, मेरा तुम्हारे सिवाय कौन है ? जाना होगा तो हम दोनों ही मिलकर जायेंगे ।" शुक्र ने कहा । इस बीच वृषपर्व स्वयं शुक्राचार्य और देवयानी के पास

आया। "आप दोनों जंगल में क्यों हैं! आइये नगर में चलें।"

उससे शुक्र ने कहा—"राजा तुम्हारे राक्षस कृत्य मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं है। मेरे शिष्य कच को तुम्हार लोगों ने मारा। अब तुम्हारी लड़की शर्मिष्ठा, मेरी लड़की को कुँये में धकेल कर चली गई। मैं चाहे तुम्हारा कितना भी उपकार करूँ तुम मेरा अपकार ही कर रहे हो।" वृषपर्व को यह बात बहुत बुरी लगी। "आपने हमें प्राणदान किया, क्या हम, हमारी श्री सम्पदा सब आपकी नहीं है! हम पर कृपा कीजिये।"

"मेरी कोई बात नहीं। मेरी लड़की को मनाओ।" शुक्राचार्य ने कहा—"बेटी, तुम बताओ क्या चाहती हो, तुम जो चाहोगी करूँगा। हम पर यों नाराज़ न हो।" वृषपर्वने देवयानी को मनाया।

"जब मैं विवाह करके अपनी ससुराल जाऊँ, तब मुझे हज़ार दासियों के साथ भेजो और उनमें शर्मिष्ठा भी हो। यही मेरी इच्छा है।" देवयानी ने कहा।

तुरत वृषपर्वने शर्मिष्ठा को बुलवाया। देवयानी की इच्छा के बारे में बताया। शर्मिष्ठा ने देवयानी से कहा—"जब तुम ससुराल जाओगी तब मैं अपनी हज़ार दासियों के साथ आकर तुम्हारी सेवा करूँगी।"

देवयानी ने उकसाते हुए पूछा—"क्या एक भिखारी की लड़की की दासी का काम करोगी!" यद्यपि शर्मिष्ठा को यह बात काँटे की तरह चुभी थी, पर दानवों का कल्याण सोचकर वह चुप रही। देवयानी वृषपर्व के साथ नगर वापिस आ गई। शर्मिष्ठा से सेवा करवाने लगी।

एक दिन देवयानी, शर्मिष्ठा, हज़ार दासियाँ और एक हज़ार स्त्रियों के साथ वन विहार के लिए उसी स्थल पर गई, जहाँ वे पहिले गई थीं। जब देवयानी हज़ार सेविकाओं से अपनी सेवा करवा रही थी तो वहाँ फिर ययाति आया। चन्द्रमा की तरह चमचमाती देवयानी, और शर्मिष्ठा को देखकर उसने पूछा—"तुम कौन हो!"

देवयानी ने उससे कहा कि वह दानव गुरु शुक्राचार्य की लड़की थी। और शर्मिष्ठा वृषपर्व की लड़की थी। एक दिन चूँ कि उसने उसको कुँये में धकेल दिया था, इसलिए आज वह उसकी दासी थी। फिर उसने कहा—"राजा, उस दिन मुझे कुँये में से बाहर निकालने के लिए तुमने मेरा हाथ पकड़ा था। वह ही हमारा पाणिग्रहण था। मेरे लिए तुम्हारे सिवाय किसी और से विवाह करना उचित नहीं है। इसलिए मुझ से विवाह करो।"

ययाति ने कहा—"मैं क्षत्रिय हूँ। नहुष का लड़का हूँ। क्षत्रिय के लिए ब्राह्मण कन्या से विवाह करना अनुचित है।"

"मेरे पिता में वह शक्ति है कि वह धर्म को भी आज्ञा दे सकते हैं। मैं उनसे यह मनवा सकती हूँ कि हम दोनों का विवाह धर्म संगत हो।" कहकर, उसने एक परिचारिका को शुक्र के पास भेजा।

शुक्र आया। देवयानी की बात सुनकर उसने ययाति से कहा—"तुम मेरी लड़की से विवाह कर सकते हो। उसमें तुम्हारा

कोई दोष नहीं है मैं यह वर देता हूं। देवयानी के साथ इन दो हजार दासी परिचारिकाओं को भी ले जाओ। इस शर्मिष्ठा के लिए तुम अन्न, वस्त्रादि का प्रबन्ध करो इसके अतिरिक्त उससे कोई सम्बन्ध न रखो। यह मेरी आज्ञा है।"

ययाति का देवयानि के साथ विवाह हुआ। पत्नी और शर्मिष्ठा के साथ, दो हज़ार दासी परिचारिकाओं को लेकर वह अपने नगर चला गया। उसने देवयानी के लिए एक घर बनवाया उसकी इच्छा पर शर्मिष्ठा के लिए एक और घर बनवाया। उसके पास एक अशोक वन भी।

कालक्रम से देवयानि ययाति से दो लड़के हुए। यदु और तुर्वसु। इस बीच, शर्मिष्ठा अपना अविवाहित जीवन से ऊब उठी। देवयानी की तरह उसने भी ययाति से विवाह करने का निश्चय किया। एक दिन जब ययाति अशोक वन में अकेला भ्रमण कर रहा था, तो उसने उससे अपनी मन की बात कही। ययाति शुक्राचार्य की आज्ञा का तिरस्कार नहीं करना चाहता था। न वह

शर्मिष्ठा की इच्छा ही ठुकराना चाहता था। इसलिए उसने बिना किसी को कहे, शर्मिष्ठा से विवाह कर लिया। उसके तीन लड़के हुए। उनके नाम थे द्रुह्य, अनु और पूरु।

जब देवयानी को मालूम हुआ कि शर्मिष्ठा के लड़के हुए हैं, तो उसने पूछा—"तुम कन्या हो न? तुम्हारे लड़के कैसे हुए?" शर्मिष्ठा ने लज्जित होकर कहा—"एक ऋषि की कृपा के कारण।" पर शर्मिष्ठा के बच्चों की शक्ल-सूरत से वह जान गई कि वे ययाति के ही लड़के थे। वह इस बात पर पति से झगड़ पड़ी। नाराज होकर अपने मैके चली गई। भयभीत हो ययाति भी उसके पीछे पीछे निकला। देवयानि की बात सुनकर शुक्राचार्य को ययाति पर गुस्सा आया, उसने उसे शाप दिया कि वह बूढ़ा हो जाये। ययातिने उसके पैरों पर पड़कर कहा—"कृपा करके शाप वापिस ले लीजिये।"

"मेरा शाप होकर रहेगा। यदि कोई युवक तुम्हारा वार्धक्य ले सका तो तुम फिर युवक हो सकोगे।" शुक्र ने कहा। ययाति ने अपने लड़कों को एक एक करके बुलाकर कहा—"मेरा वार्धक्य लेकर, मुझे अपना यौवन दो।" इसके लिए देवयानी के लड़के नहीं माने। शर्मिष्ठा के बड़े दो लड़के भी नहीं माने। पर आखिरी लड़का पूरु इसके लिए मान गया। पूरु के यौवन के कारण ययाति बहुत समय भोग-विलास का आनन्द लेता रहा। आखिर उसने अपना यौवन उसको वापिस दे दिया और उसको ही अपना राज्य देकर वह मर गया। देवयानि ने बहुत प्रयत्न किया, पर ययाति का उत्तराधिकारी हुआ शर्मिष्ठा का लड़का ही।

कहा जाता है कि हमारे पूर्वज उत्तर ध्रुव के प्रान्त में रहा करते थे। वहाँ उत्तरायण में छः महीने का दिन रहता है। दक्षिणायन में छः महीने रात्रि। यह दीर्घ रात्रि है। उस दीर्घ रात्रि में बिना दीये की रोशनी के लोग काम नहीं कर सकते। दीर्घ रात्रि का आरम्भ ही दीपावली का त्यौहार है—कहा जाता है, कार्तिक दीपों का रखना भी वहीं की परम्परा है।

मृत व्यक्ति नरक से पितृलोक जाते हैं। नरक चूंकि अंधकारमय है, उनको रास्ता दिखाने के लिए और पितृलोक के अधिपति यम की आराधना के लिए दीपावली मनाई जाती है, यह भी कई का विश्वास है।

बलि सम्राट ने बलशाली होकर जब स्वर्ग पर अधिकार कर लिया तो विष्णु वामन रूप में आये और उससे तीन कदम जगह माँगी। दो कदमों में उसने स्वर्ग और भूमि ले ली। और बलि को पाताल में भेज दिया। हर साल बलि सम्राट, बलि पाड्य के दिन भूमि पर आता है। इसलिए उससे एक दिन पहिले हम दीपावली मनाते हैं।

रावण के सीतापहरण के बाद राम ने वानर सेना के साथ उस पर आक्रमण किया। विजयदशमी के दिन उसको उन्होंने मार दिया। उसके बाद राम, सीता के साथ अयोध्या आये। वहाँ

नरकासुर को पराजित करने के लिए श्रीकृष्ण, सत्यभामा के साथ निकले। नरक की चोट से कृष्ण मूर्छित हुये। सत्यभामा के संकेत से उन्होंने नरक को मारा और भूमि को उसके दबदबे से छुड़ाया। नरक, नरक चतुर्दशी के दिन मरा, अगले दिन दीपावली अमावस्या है। ये दोनों ही हमारे लिए त्यौहार हैं।

ईसा से ५८ वर्ष पूर्व विक्रम संवत् प्रारम्भ हुआ। गुजराती, मारवाड़ी व अन्य लोग उस वर्ष को ही मानते हैं। विक्रम संवत् दीपावली के दिन ही प्रारम्भ होता है। उस दिन ही विक्रम ने शकों को पराजित करके "शकारि" की उपाधि पायी।

हमारी दीपावली शरदऋतु में प्रारम्भ होती है। ये कृमि-कीड़े जो मनुष्यों और फसलों के लिए अहितकारी होते हैं, पैदा हो चुके होते हैं। जो पटाके दीपावली के दिन जलाये जाते है, उनमें इन कीड़ों को मारने की शक्ति होती है। क्योंकि इनमें गन्धक होती है। गन्धक के धुंए में ये कृमि कीड़े नष्ट होजाते है।

दीपावली का त्यौहार बड़े छोटे सभी के लिए आनन्ददायक है। इस दिन नये कपड़े पहिने जाते हैं। पकवान खाये जाते हैं। पटाके जलाये जाते हैं और रंग बिरंगे चित्रोंवाला "चन्दामामा" पढ़ा जाता है।

फलों का टोकरा

नानी एक दिन गाँव के पटवारी के घर गई। उसके सामने अपने पोते के बारे में रोई धोई।

“हमारा लड़का घर में बिल्कुल निखट्टू हो गया है। उसे एक काम आता जाता नहीं। क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आ रहा है।” उसने कहा।

“अरे, जाने दो। उसे कुछ दिन हमारे घर रखो। उसे सब काम अच्छी तरह सिखाऊँगा।” गाँव के पटवारी ने कहा। फिर क्या था, गोलमटोल भीम पटवारी के घर काम करने लगा। जाने उसकी किस्मत भी क्या थी कि वह काम जैसा कहा जाता, करता, और फिर भी फटकार सुनता। इसका कारण उसकी लापरवाही न थी। परन्तु उसमें सोचने समझने की अक्ल ही न थी। पटवारी जहाँ जहाँ जाता, वह भी जाता।

एक दिन पटवारी ने भीम को बुलाकर कहा—“नदी पार जहाँ हम परसों गये थे, जाओ। और वहाँ हमारे किसान रामलाल को यह चिट्ठी दे आओ।”

भीम चिट्ठी लेकर रामलाल के पास गया। चिट्ठी देकर वह वापिस जाने को था कि रामलाल ने भीम को फलों का टोकरा देते हुए कहा—“इसमें पचास केले हैं” ये जल्दी ही पक जायेंगे। पकने पर ये लाल हो जायेंगे। जब ये लाल हो जायें तो उनको और ज्यादह देर रखना ठीक नहीं, तुरत खा लेना चाहिए।”

भीम फलों का टोकरा लेकर निकला। जब वह नदी के पास आया तो वहाँ

बड़ा तेज था। उस दिन नदी पार न कर पाया। अगले दिन भीम ने नदी पार करके टोकरी देखी तो केले लाल हो गये थे। तुरत उसको किसान की बात याद हो आयी कि लाल होने पर फलों को नहीं रखना चाहिए। उनको तुरत खा लेना चाहिए। उसने जैसे भी हो, पचास केले खालिये।

"क्या काम हो गया! चिट्ठी रामलाल को दे दी न!" पटवारी ने पूछा।

"दे दी थी। इस टोकरी को रामलाल ने आपको देने के लिए कहा है।" भीम ने खाली टोकरी पटवारी को दे दी।

"यह खाली टोकरी क्यों दी है!" पटवारी ने चकित होकर पूछा।

"खाली टोकरी नहीं दी। उसने उसमें पचास केले रखे थे और कहा था लाल होने पर उनको तुरत खा लिया जाय। यदि वे रखे गये तो बिगड़ जायेंगे।" भीम ने कहा।

पटवारी गरमा गया। उसने भीम को बुरी तरह डाँटा, डपटा—"तुम अपना मुँह मुझे न दिखाओ। जाओ।" उसने उसे घर भेज दिया। नानी उसको देखते ही ताड़ गई कि कुछ हो गया था। सब कुछ सुनने के बाद नानी ने कहा—"अरे गधे, तुझे इस जन्म में कभी अक्ल न आयेगी।"

"तो किस जन्म में आयेगी!" भीम ने पूछा। "एक और जन्म लेना होगा!" नानी ने कहा।

"एक और जन्म मैं कब लूँगा!" भीम ने पूछा।

"मरने के बाद ही एक और जन्म। तुम काम करना छोड़ दो। फिर से न निकलो घर से।" नानी ने कहा।

बिल्लीपुर की युवरानी

निर्जन वन में एक लकड़हारा रहा करता था। उसने वन के किनारे एक झोंपड़ी बना रखी थी। उसमें वह, उसकी पत्नी, लड़का और लड़की रहा करते थे। उनके पास एक गौ और एक पालतू बिल्ली भी थी। लकड़हारे की पत्नी से एक घड़ी न पटती। छोटी छोटी बात पर कुत्ते बिल्ली की तरह ये झगड़ते। एक दिन शाम को ये रोज की तरह झगड़ रहे थे "अब मैं इस घर में एक घड़ी नहीं रहूँगी।" कहकर पत्नी कलछी दूर फेंककर, अन्धेरे में कहीं चली गई। उसने पति को भोजन भी न परोसा।

"देखूँ, कहाँ जाती हो तुम!" कहता कहता खाता खाता पति उठा और वह भी बाहर चला गया।

आधी रात तक भाई बहिन उनकी प्रतीक्षा करते रहे। पर वे जो गये, सो वापिस न आये। अगले दिन सवेरे भाई ने बहिन से कहा—"अब वे वापिस न आयेंगे, अगर वे आये भी तो मैं यहाँ न रहूँगा, मैं अपनी रोजी रोटी खुद देख लूँगा। जो कुछ सम्पत्ति है, हम उसको आधा आधा बाँट लेंगे।"

"हमारी क्या सम्पत्ति है! खाक! एक गौ और एक बिल्ली ही तो है।" बहिन ने कहा।

"हाँ, गाय मैं ले लूँगा। बिल्ली तुम ले लो।" भाई ने कहा।

बहिन आपत्ति उठाने जा रही थी कि बिल्ली उसके पैर पर प्रेम से अपना शरीर रगड़ने लगी। न मालूम बहिन ने क्या

सोचा कि उसने अपने हाथ में बिल्ली उठा ली। "अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी!" उसने भाई से कहा।

कहीं ऐसा न हो कि बहिन गाय ही माँगने लगे, भाई गाय लेकर बाहर निकल गया। बहिन भाई की ओर देख रही थी कि झोंपड़ी में से कुछ बातें सुनाई पड़ीं। "चलो, अब हम अपने रास्ते चले जायें।"

बहिन ने जब चकित होकर पीछे देखा, तो बिल्ली की जगह एक लड़की दिखाई दी। "कौन हो तुम?" बहिन ने उस लड़की से पूछा।

"बहिन, मैं तुम्हारी बिल्ली ही हूँ। मुझे पहिचाना नहीं।" कहकर उस बिल्ली ने अपनी असली कहानी बहिन को बता दी।

वह लड़की एक मान्त्रिक की पुत्री थी। वह मान्त्रिक वन में रहा करता था। उसके निवास के बारे में किसी को कुछ न मालूम था। वह मन्त्र शक्ति के द्वारा अपनी आवश्यकताओं को पूरी कर लेता था। वह कुछ दिन तक जीवित रहा। उसने अपनी लड़की को, वह जब पाँच वर्ष की थी, कामरूप विद्या सिखाई। वह उस विद्या की सहायता से जिस जन्तु का रूप धारण करना चाहती, वह रूप धारण करती और आस-पास की सभी बातों को मालूम कर लेती। उसे मनुष्यों के साथ रहने का शौक था। उसका पिता निर्जन घने जंगल में रहा करता। इसलिए वह साधारणतया पिता के पास नहीं जाया करती। कुछ दिन पहिले वह मान्त्रिक मर गया था। तब से यह लड़की और भी स्वतन्त्र रूप से घूमा फिरा करती। वह यद्यपि बिल्ली के रूप में लकड़हारे के घर रहा करती, तो भी वह अपना रूप बदलकर इधर-उधर घूमा करती।

सब सुनने के बाद लकड़हारे की लड़की ने कहा—"अच्छा हुआ कि मैंने गाय के लिए झगड़ा नहीं किया और तुम्हें ले लिया। अब बताओ हम कहाँ चलें।"

"यहाँ इस झोंपड़ी के सिवाय है ही क्या! जो मैंने कहा अगर तुमने किया तो मैं तुमको रानी बना दूँगी। उसके बाद हम और तुम आराम से रह सकेंगी।" मान्त्रिक की लड़की ने कहा।

वह फिर बिल्ली बन गई। वह जंगल में रास्ता बनाती निकली। लकड़हारे की लड़की उसके पीछे पीछे चली। दोनों ने इस तरह बहुत दूर चलकर जंगल पार किया। थोड़ी दूर पर उनको एक किला दिखाई दिया। तब मान्त्रिक की लड़की ने लकड़हारे की लड़की से कहा—"बहिन, तुम अपने सब कपड़े उतारकर उस मोटे पेड़ के खोल में बैठो। मैं उस किले में जाऊँगी, वहाँ राजा से कहूँगी कि तुम एक राजकुमारी हो और तुम्हें, तुम्हारे नौकर-चाकरों को डाकुओं ने लूट लिया है और तुम्हारे लोग इधर-उधर बिखर गये हैं। वे आकर तुम्हें ले जायेंगे। तुम भी इसी तरह रहना जैसे राजकुमारी हो।

दिया। जमीन भी रौंदी। अपनी सहेली के कपड़ों को उसने चीथड़े चीथड़े कर दिये। यह सब करके वह पक्षी बनकर किले की ओर उड़ गई।

सैनिक मान्त्रिक की लड़की को किले के राजा के पास ले गये। "महाराज, यह लड़की किसी राजकुमारी की दासी है। कह रही है कि किले के पास ही उसकी राजकुमारी और उनके नौकर चाकरों को डाकुओं ने लूट लिया है। राजकुमारी के कपड़े भी उन्होंने ले लिये हैं। क्या आज्ञा है आपकी?"

राजा ने उन सैनिकों से कहा—"तुम कुछ पोषाक लेकर युवराज के साथ जहाँ यह लड़की ले जाये, वहाँ जाओ। यह जो कह रही है, यदि वह सच हो, तो राजकुमारी को गौरवपूर्वक यहाँ लाओ। यदि हमारे प्रदेश में डाकू हैं तो उनके लिए तो हम ही जिम्मेवार हैं।"

युवराज, राजकुमारी के लिए उचित वस्त्र लेकर नौकर-चाकरों के साथ किले से निकला। मान्त्रिक की लड़की ने रौंदी हुई जमीन, पेड़, टहनियाँ वगैरह, दिखाकर बताया "हमें यहीं डाकुओं ने लूटा था।"

जब वे पूछें कि तुम्हारा कौन-सा नगर है, तो कहना बिल्लीपुर।

"राजकुमारियाँ क्या करती हैं मैं नहीं जानती। यदि उन्होंने असलियत मालूम करके हमें मारा पीटा तो!" लकड़हारे की लड़की ने डरते हुए पूछा।

"मैं तुम्हारे साथ किसी न किसी रूप में रहती ही रहूँगी। अगर तुम कभी गल्ती से कुछ कर भी बैठो तो कहना कि बिल्लीपुर में इसी तरह किया जाता है।" मान्त्रिक की लड़की ने कहा। फिर उसने हाथी का रूप धारण किया। पेड़ पौधों को रौंद

"तब तो डाकुओं और राजकुमारी के नौकर चाकरों में भयंकर युद्ध हुआ होगा।" राजकुमार ने कहा।

"हाँ, महाराज! हमारी मालकिन उस खोल में है। यदि कपड़े दिये तो उन्हें पहिनवाकर यहाँ ले आऊँगी।" मान्त्रिक की लड़की ने कहा।

जब अच्छे कपड़े पहिनकर, लकड़हारे की लड़की खोल में से बाहर आई तो राजकुमार उसको देखकर मुग्ध हो गया। यूँ तो लड़की की शक्ल-सूरत ठीक ही थी। रानी के कपड़े पहिनकर तो वह और भी सुन्दर लगने लगी। राजकुमार सपने देखने लगा कि पिता को मनाकर वह उससे विवाह करेगा। उसको वह पाल्की में बिठाकर अन्तःपुर में ले गया।

रानी ने भी उसे देखकर सोचा कि हो न हो, वह राजकुमारी ही थी। "तुम्हारा नगर कहाँ है! कहाँ जा रही हो! क्या हुआ! यह सब बताओ तो" जब रानी ने ये प्रश्न किये, तो लकड़हारे की लड़की भय से काँपने लगी। वह चिल्ला उठी। पास में खड़ी मान्त्रिक की लड़की बोली— "महारानी, जो कुछ गुज़रा है मालकिन को उसकी याद न दिलाइये। कभी उनको इस तरह का अनुभव न हुआ था। हम बिलीपुर के हैं। उस नगर की हमारी मालकिन रानी हैं। अब उनका कोई नहीं है। क्योंकि आपत्ति में आपने ही उनकी सहायता की है, इसलिए आप ही उनके बन्धु बान्धव हैं।"

लकड़हारे की लड़की को रानी ने कुछ गहने भी दिये। उन गहनों को पहिनने के बाद तो वह लड़की और भी सुन्दर लगी। उसके लिए, मान्त्रिक की उस लड़की को, जो अपने को उसकी दासी

बता रही थी, एक कमरा निश्चित कर दिया गया। सिवाय भोजन करने के वह उस कमरे से बाहर न आती, युवराज रोज कोई न कोई बहाना करके दिन में दो तीन बार उसके कमरे में हो आया करता। लकड़हारे की लड़की, सहेली जो कुछ कहती करती जाती। यदि किसी बात पर रानी को अचरज होता, तो वह कहती कि यह हमारे विल्लीपुर की परिपाटी है।"

वह सचमुच राजकुमारी है कि नहीं यह जानने के लिए राजा रानी ने कुछ परीक्षायें लीं, क्योंकि वे जान गये थे कि उनका बड़ा लड़का उससे प्रेम करने लगा था और उससे विवाह करना चाहता था। उस हालत में यदि पहिले ही न जान लिया गया कि वह राजकुमारी थी कि नहीं, तो बाद में पछताने से क्या फायदा!

परन्तु मान्त्रिक की लड़की मक्खी के रुप में, कभी मच्छर के रुप में, हमेशा उनके आसपास ही घूमती रहती और जो कुछ परीक्षा वे सोचते, वह लकड़हारे की लड़की को बता देती और यह भी बताती कि उसको क्या, कैसे करना था। इसलिए लकड़हारे की लड़की सभी परिक्षाओं में उत्तीर्ण हुई। जो उसके लिए उचित आसन था, वह उस पर ही बैठी। जो पकवान उसके लिए योग्य न था वह उसे छूती भी न। एक बार रानी ने उसके गद्दे के नीचे एक तिनका रख दिया। अगले दिन सवेरे रानी ने लकड़हारे की लड़की से पूछा—"रात आराम से सोई कि नहीं।"

"क्या कहूँ! मुझे ऐसा लगा, जैसे गद्दे के नीचे कोई चोर हो। रात भर करवटें बदलती रही। न मालूम क्या बात थी!" लकड़हारे की लड़की ने कहा।

जब वह प्रति परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई, तो राजा और रानी को भी वह पसन्द आयी। बिल्लीपुर की राजकुमारी के साथ वे अपने लड़के का विवाह करने के लिए मान गये। विवाह का मुहूर्त भी निश्चित कर दिया गया। विवाह लड़की के घर होना चाहिए था इसलिए दूल्हा अपने नौकर-चाकरों के साथ निकल पड़ा।

जब बात इतनी दूर आ गई तो लकड़हारे की लड़की को डर लगा। उसे अपनी सहेली पर गुस्सा आया। "तुम्हारी बदौलत ही, तो मुझ पर आफ़त आई है। अब सच मालूम हो जायेगा। ये मुझे मार देंगे।" कहती कहती वह रो पड़ी।

"तुम क्यों फिजूल रोती हो, मैं जो हूँ सारा इन्तज़ाम करने के लिए! अभी एक सप्ताह का समय है, विवाह के लिए। मैं इस बीच जाकर तुम्हारे लिए एक राज्य और किले की व्यवस्था कर दूँगी।" कहकर वह मान्त्रिक की लड़की पक्षी के रूप में उसी दिन रात को निकल गई। वहाँ से पांच छः कोस दूरी पर, पहाड़ों में एक किले में गई। बहुत दिनों से वहाँ एक राक्षसी रहा करती थी। वह राक्षसी सूर्य का प्रकाश

बिल्कुल न सह पाती। परन्तु अन्धेरे में उसकी शक्ति अपरिमित हो जाती। रात के समय वह हाथी जैसे जन्तु को भी आसानी से मार सकती थी। इसलिए वह राक्षसी अन्धेरा होते ही किले से निकलती। आसपास जो जन्तु मिलते, उन्हें खा लेती और सवेरा होने से पहिले ही किले में चली जाती और दिन-भर अन्धेरी कोठरी में बन्द रहती और सोती रहती।

मान्त्रिक की लड़की कई बार वेश बदलकर उस किले में आयी थी। उस राक्षसी को देखा था। उसका रहस्य

जान गई थी। इसलिए आधी रात के समय वह राक्षसी के किले में चली गई। राक्षसी जिन चटखनियों को किले के फाटक पर लगाती थी, उन्हें लगाकर बैठ गई।

जब सवेरा हो रहा था, तो राक्षसी ने आकर दरवाजा खटखटाया। पर फाटक न खुले। राक्षसी को यह जानकर बड़ा गुस्सा आया कि जब वह बाहर शिकार पर गई हुई थी तो कोई उसके किले में आ घुसा था।

"कौन है अन्दर? दरवाजा खोलो। नहीं तो मार दूँगी।" राक्षसी गरजी।

"मैं हूँ घड़ा।" मान्त्रिक की लड़की ने जवाब दिया।

यह जवाब सुनकर राक्षसी और भी गरमाई। "तुम में इतनी हिम्मत! मेरे घर के फाटक को ही तुम बन्द करती हो! जल्दी दरवाज़ा खोलो।"

"पहिले तुम मेरी बात सुनो। तब दरवाज़ा खोलूँगी। मैं पहिले दाल था। फिर मुझे पानी में रखा गया। फिर सुखाया गया। फिर कूटा गया। फिर छाना गया।" घड़े ने अपनी कहानी सुनानी धीमे धीमे प्रारम्भ की।

राक्षसी को इतना गुस्सा आया कि उसने ज़ोर से किवाड़ पर लात मारी। क्योंकि चटखनी वही थी, जो राक्षसी स्वयं रखा करती थी, किवाड़ नहीं हिले।

"यदि तुमने मेरी कहानी सुने बगैर किवाड़ खटखटाये तो मैं खोलूँगा ही न।" बड़े ने कहा—"मैं पहिले दाल था। मुझे पानी में डाला गया, फिर सुखाया गया। फिर कूटा गया, फिर छाना गया, फिर मुझे गूँदा गया, उसमें नमक डाला गया।" मान्त्रिक की लड़की ने कहानी सुनानी शुरु की।

राक्षसी ने जो पूर्व की ओर देखा, तो तब तक सवेरा हो चुका था। सूर्य ऊपर उठ रहा था। यदि अन्दर से बड़े ने दरवाज़ा न खोला, तो वह बाहर रहेगी, तो जरूर मर जायेगी। इसलिए राक्षसी ने गरज गरज कर डराने की सोची। फिर उसने मान्त्रिक की लड़की को मनाया। "प्यारे, दरवाज़ा खोलो। मैं कुछ नहीं कहूँगी। तुम्हें बहुत-सा सोना दूँगी। मणियाँ दूँगी।" राक्षसी ने कहा।

जब कभी राक्षसी उसे डाँटती तो मान्त्रिक की लड़की कहती—"तुमने मेरी

कहानी खराब कर दी। फिर सुनो।" कहकर वह फिर शुरु से अपनी कहानी सुनानी शुरु करती।

इतने में सूर्योदय हो ही गया। जब धूप उस पर पड़ने लगी तो राक्षसी बर्फ की तरह पिघलने लगी। जल्दी ही उसका सारा शरीर साररहित हो गया। वह मूर्छित हो गई। जब सूरज जरा ऊपर आया, तो फाटक के बाहर, सिवाय राक्षसी के चर्म के कुछ न रह गया था।

मान्त्रिक की लड़की का काम आधा हो गया था। उसने आस पास के गाँव के लोगों के पास जाकर कहा—"राक्षसी मर गई हैं। किले में जो घर हैं, उनमें तुम जाकर फिर बस सकते हो। इस किले का नाम बिल्लीपुर है। जल्दी ही हमारी महारानी यहाँ आयेंगी और अपना विवाह करेंगी।"

फिर वह अपनी सहेली के पास गई। उससे कहा—"सब इन्तजाम हो गये हैं। बस हमारा जाना और विवाह करना बाकी है। बिल्लीपुर के लोगों ने विवाह की तैयारियाँ शुरु कर दी हैं।" उसने जो कुछ किया था वह सब अपनी सहेली को बताया।

इसके बाद लकड़हारे की लड़की और उसके साथ विवाह करनेवाला राजकुमार नौकर चाकरों के साथ वहाँ आये। मान्त्रिक की लड़की ने रास्ता दिखाया। राक्षसी के किले में घुसकर लोग विवाह का प्रबन्ध करने लगे। वहाँ लकड़हारे की लड़की का राजकुमार के साथ धूमधाम से विवाह हुआ। फिर राजकुमार के भाई ने मान्त्रिक की लड़की के साथ विवाह कर लिया। सब सुखपूर्वक रहने लगे।

बातों की दुकान

एक गाँव में एक अजीब दुकान थी— बातों की दुकान। धर्मपाल नाम का व्यक्ति उसे चलाया करता था। उसने एक एक चिट पर एक एक सलाह लिख रखी थी। जिस किसी को सलाह की जरूरत होती, उसे, जितनी सलाह वह चाहता, वह बेचता, एक एक चिट की कीमत सौ रुपये थी। जो कोई उन चिट को खरीदता, उन पर लिखी सलाह पर चलता उसे बहुत फायदा होता।

एक दिन उस दुकान में एक सेठ आया। वह बड़ा अमीर था। "बातों की दुकान" में उसने तीन सौ रुपये देकर तीन सलाहें खरीदीं। वे सलाह ये थीं।

जब कभी यात्रा पर निकलो, पत्नी को कुछ न बताओ।

यदि रास्ते में कहीं भोजन करना पड़ जाय, तो कभी रास्ते के पास न करो।

जल्दी में किसी से भी किसी बात पर शर्त न लगाओ।

ये सलाहें खरीद कर सेठ घर चला गया। उसने जानना चाहा कि इनमें कितनी सचाई थी। बिना पत्नी को कहे, नौ थैलियों में नौ हज़ार रुपये रखे, गाड़ी में सवार हो, शहर में व्यापार करने निकल पड़ा।

सेठ के कुछ दूर जाने के बाद भोजन का समय हुआ। रास्ते से कुछ दूरी पर एक कुआँ दिखाई दिया। वहाँ उसने गाड़ी रोकी। कुँये के पास भोजन करके वह फिर निकल पड़ा। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने थैलियाँ गिनीं, तो वे आठ ही रह गई थीं। जब जाकर कुँये के पास उसने

एस. राजगोपालराव

थैली खोली, तो वहाँ उसे यह मिली। वह वहाँ घास के ढेर के नीचे पड़ी थी। उस थैली को लेकर जब वह गाड़ी के पास आ रहा था, तो उसके पैर में गोखरु चुभा, और कमाल यह कि उसके चुभने से उसके पैर का एक फोड़ा, जो ठीक न हो रहा था, यकायक ठीक हो गया। उस काँटे में, हो न हो, कोई खूबी थी, यह सोच उसने उसे वापिसी रास्ते पर घर ले जाना चाहा। इसलिए कुँये के पास उसने निशान लगाया।

शहर में उसने खूब व्यापार किया। सेठ ने खूब पैसा कमाया। इतने में वह काँटे की बात ही भूल गया और एक और रास्ते से अपने गाँव चला गया। जब वह गाँव में पहुँचा, तो उस गाँव का लखपति एक बड़े फोड़े के कारण बड़ी तकलीफ में था। उसने घोषणा कर रखी थी कि जो कोई उसका फोड़ा ठीक कर देगा वह उसे दस हजार रुपये देगा। तब तक उसकी कोई उचित चिकित्सा न कर सका था।

जब यह बात उसे सुनाई दी तो उसे गोखरु की बात याद आयी। यदि वह उसको ला सका, तो उसका फोड़ा ठीक हो जायेगा और उसे दस हजार रुपया मिलेगा। इसी उत्साह में वह उन सलाहों को भूल गया। उसने पत्नी को बता दिया कि कैसे उसने एक गोखरु छुपा रखा था, कैसे वह उसे लाकर दस हजार रुपये पा सकता था। "मैं अभी लखपति के पास जाता हूँ। मैं उनसे लिखवाऊँगा। कल मैं जाकर गोखरु ले आऊँगा।" उसने पत्नी से कहा। पत्नी ने यह बात जैसे कोई बड़ा भारी भेद हो, पड़ोस की स्त्री से कही। उसने अपने पति से कहा। जब सेठ लखपति के घर जा रहा था तो

पड़ोस का आदमी उसे रास्ते में मिला। बातों बातों में दोनों जान गये कि वे एक ही काम पर जा रहे थे।

"वह फोड़ा कैसे ठीक होगा, यह मेरे सिवाय कोई नहीं जानता।" सेठ ने कहा।

"मैं भी यह जानता हूं।" पड़ोस के आदमी ने कहा।

"लखपति का फोड़ा तुम नहीं ठीक कर सकते।" सेठ ने कहा।

"ठीक करदूंगा। चाहो तो शर्त लगाओ।" पड़ोस के आदमी ने कहा। सेठ वे सलाहें, जो उसने खरीदी थीं, फिर भूल बैठा। उसने कहा कि यदि पड़ोस के आदमी ने फोड़ा ठीक कर दिया, तो जो कुछ वह उसके घर में छुयेगा, वह उसे दे देगा।

पड़ोस का आदमी उसी दिन शाम को कुँये के पास गया। सेठ ने जो गोखरु वहाँ गाड़ रखा था, उसको वह उखाड़ लाया। लखपति के फोड़े पर लगाकर उसने उसे ठीक कर दिया।

सेठ के गोखरु के लिए निकलने से पहिले ही यह सब हो गया। अगर मान

लो शर्त के अनुसार पड़ोस के आदमी ने उसके घर आकर उसकी तिजोरी छूदी तो क्या होगा! उसकी धन दौलत, हजारों रुपये सब उसमें थे। क्योंकि उसने सलाह नहीं मानी थी इसलिए उस पर यह आफ़त आ रही थी। उसने पत्नी को बताया कि वह गोखरु लेने के लिए जा रहा था। उसने पड़ोसी से शर्त भी लगाई।

सेठ भागा भागा नातों की दुकानवाले धर्मपाल के पास गया। उसके पैरों पड़ा। जो कुछ गुजरा था, उसने उसको बताया। उसने उससे पूछा कि वह कोई ऐसा रास्ता बताये जिससे उसको हानि न हो।

"जो हुआ सो हुआ। तुम अपनी तिजोरी कहीं अटारी के ऊपर छुपा दो। जब पड़ोसी आये तो उस पर सीढ़ी लगा देना। मैं भी आऊँगा।" धर्मपालने कहा।

यह जान कि पड़ोसी सेठ के घर अपनी शर्त के अनुसार कोई चीज़ लेनेवाला था, तो पांच दस लोग जमा हो गये। उसी दिन शाम को पड़ोसी पांच परिचित व्यक्तियों को लेकर सेठ के घर में आया। उसने इधर उधर देखा। तिजोरी नहीं दिखाई दी। अटारी और सीढ़ी दिखाई दी। तिजोरी ऊपर थी। सीढ़ी ऊपर चढ़ने के लिए पड़ोसी ने सीढ़ी पकड़ी।

"सेठ, इसने सीढ़ी छू दी है। यह अब तुम्हारी नहीं है। तुम शर्त में हार गये हो।" धर्मपाल ने कहा।

इस पर पड़ोसी ने आपत्ति की। परन्तु जो लोग वहाँ जमा हो गये थे, उन्होंने कहा कि धर्मपाल का कहना ही ठीक था। उसके कारण सेठ को कोई खास हानि न हुई।

बालकाण्ड

पुष्कर में विश्वामित्र ने जो तपस्या की, उससे सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुए और उन्होंने उनको ऋषि की उपाधि दी।

विश्वामित्र उससे भी सन्तुष्ट न हुए उन्होंने और कठोर तपस्या करनी प्रारम्भ की। उस समय उनको मेनका नामक अप्सरा दिखाई दी। उसको देखकर उनका मन विचलित हो उठा। वे अपनी तपस्या भूल गये। वे उसको अपने आश्रम में ले गये। उसके साथ दस साल उन्होंने सुख से बिताये।

तब उनको अपनी भूल मालूम हुई। उन्होंने सोचा कि मेरी तपस्या भंग करने के लिये देवताओं ने मेनका को भेजा है। उनमें परिवर्तन देखकर मेनका ने सोचा कि कहीं ऐसा न हो कि विश्वामित्र उसको शाप दें। परन्तु विश्वामित्र ने उससे केवल इतना कहा—"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। दोष सारा मेरा है। अब तुम चले जाओ।"

इसके बाद वे उत्तर दिशा की ओर चल पड़े। हिमालय में कौशिकी नदी के किनारे रहते हुए उन्होंने बड़ी कठिन तपस्या की। आखिर ब्रह्मा के साथ देवता आये। उन्होंने उनको महर्षि की उपाधि दी।

विश्वामित्र ने ब्रह्मा से पूछा—"क्या अब मैं जितेन्द्रिय हूं!"

"अभी तुम जितेन्द्रिय नहीं हुए हो।" ब्रह्मा ने कहा। जितेन्द्रिय होने के लिए वायु भक्षण करते विश्वामित्र ने घोर तपस्या की। उनकी इस तपस्या को देख इन्द्र और देवताओं को भय हुआ।

इन्द्र ने रम्भा को बुलाकर कहा—"तुम आकर विश्वामित्र की तपस्या भंग करो। मैं भी मन्मथ को लेकर तुम्हारी सहायता के लिये आऊँगा। मैं कोयल के रूप में आऊँगा।"

विश्वामित्र तपस्या में थे कि कोयल की कूक सुनाई दी। जब उन्होंने आँखें खोलीं तो सामने रम्भा थी। यह सोच कि यह सब देवताओं की चाल थी, विश्वामित्र ने उसको शाप दिया कि वह पत्थर हो जाये। इन्द्र और मन्मथ भाग गये।

तुरत विश्वामित्र को पश्चाताप हुआ—"अरे अरे मैंने क्यों शाप दे दिया! कोप का मैं संयम क्यों न कर सका!" उन्होंने निश्चय कर लिया था कि चाहे कोई कुछ करे वे क्रुद्ध न होंगे। तप से उन्होंने ब्राह्मणत्व पाने का निश्चय कर लिया था।

इस उद्देश्य से वे उत्तर प्रदेश को छोड़कर पूर्व की ओर गये। मौनव्रत धारण करके उन्होंने अपनी तपस्या जारी रखी। उस तपस्या की उष्णता से तीनों लोक दग्ध से हो गये। देवताओं ने जाकर ब्रह्मा से प्रार्थना की। ब्रह्मा ने आकर विश्वामित्र से कहा—"ब्रह्मर्षि, अब तुम में ब्राह्मणत्व आ गया है।"

विश्वामित्र ने कहा—"मैं तभी सन्तुष्ट होऊँगा, जब वशिष्ठ मुझे ब्राह्मण मानेंगे।" देवताओं ने वशिष्ट से भी विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि स्वीकार करवाया। वशिष्ठ और विश्वामित्र का कलह समाप्त हुआ और उनमें स्नेहपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हुए।

इस तरह शतानन्द ने विश्वामित्र की कहानी जब समाप्त की तो सूर्यास्त हो गया था। जनक महाराजा विश्वामित्र के आगमन पर अपना हर्ष प्रकट करके चले गये। अगले दिन सबेरे उन्होंने विश्वामित्र, राम और लक्ष्मण को निमन्त्रित किया।

जनक ने उस धनुष के बारे में विश्वामित्र से कहा जो उनके पास था। दक्ष-यज्ञ के समय शिव ने उस धनुष से देवताओं को मारना चाहा था। आखिर उनकी विनती सुनकर उसने वह धनुष देवताओं को ही दे दिया। तब से वह धनुष उनके वंश में ही चला आ रहा था। न उसे कोई उठा सकता था न कोई हिला ही सकता था।

जब एक बार जनक यज्ञ के लिए भूमि में हल चला रहे थे, तो भूमि में से एक लड़की निकली। जनक ने उसका नाम सीता रखा। उसको वे अपनी लड़की की तरह पालने पोसने लगे। उन्होंने निश्चय किया कि जो कोई शिव का धनुष उठायेगा उसके साथ वे सीता का विवाह कर देंगे। यह जानकर कितने ही राजकुमार आये। पर कोई उस धनुष को न उठा सका।

आखिर उन राजाओं ने, जो हार गये थे, मिलकर मिथिला पर आक्रमण किया और उसको एक साल तक घेरे रखा। जनक को न सूझा कि क्या करें. उन्होंने देवताओं से प्रार्थना की। देवताओं ने आकर उन राजा राजकुमारों को भगाया।

यह वृत्तान्त सुनकर विश्वामित्र ने उस धनुष को राम को दिखाने के लिये कहा। उसको लाने के लिये जनक ने लोगों को नगर में भेजा। आठ चकों पर रखे लोहे के सन्दूक में वह धनुष रखा हुआ था। उसे यज्ञशाला के पास लाया गया।

"देखूँ तो मैं उसे उठा सकता हूँ कि नहीं, इस पर बाण चढ़ा सकता हूँ कि नहीं!" कहते हुए राम ने सन्दूक खोला। धनुष का मध्य भाग पकड़कर उसे ऊपर उठाया और उस पर प्रत्यंचा भी चढ़ा दी। जब उन्होंने उस पर बाण चढ़ाने का प्रयत्न किया तो विद्युद्ध्वनि-सी हुई और धनुष बीच में टूट गया। सब चकित रह गये। जनक को परम आनन्द हुआ। "मैंने सोचा था कि सीता का विवाह किसी शौर्यवान से ही करूँगा। यह लड़का सीता के योग्य है। इन दोनों के विवाह के बारे में मैं अभी अयोध्या खबर भेजूँगा।"

जनक के दूतों ने तीन दिन यात्रा की। चौथे दिन प्रातःकाल अयोध्या पहुँचे। उन्होंने दशरथ से धनुर्भंग के बारे में कहा और निवेदन किया कि वे विवाह के लिये प्रस्थान करें। दशरथ बड़े खुश हुए। उन्होंने मन्त्रियों के साथ विचार विमर्श किया। उन्होंने निर्णय किया कि जनक के परिवार से विवाह सम्बन्ध स्थापित करना उचित था। बशिष्ठ, नामदेव, जाबाली, काश्यप, मार्कण्डेय आदि चले गये। दशरथ अपनी

सेना लेकर फिर निकले। चार दिन बाद वे जनक की यज्ञशाला में पहुँचे।

तब तक यज्ञ समाप्त हो चुके थे और सीता को वधू भी बनाया जा चुका था। जनक और दशरथ एक जगह आये। जनक के साथ उनका भाई कुशध्वज भी था। दशरथ की ओर से वशिष्ठ ने राजा जनक को दशरथ की वंशावली के बारे में पूरी जानकारी दी। राजा जनक ने अपने वंश के बारे में स्वयं दशरथ को बताया।

दोनों ही उच्च वंश के थे। दोनों ही समिधी हो सकते थे। जनक की सीता के अतिरिक्त एक और लड़की था। उसका नाम था ऊर्मिला। उनके भाई के भी दो लड़कियाँ थीं, उनका नाम था माण्डवी और श्रुतकीर्ति। सीता और राम के विवाह के समय जनक ने सूचित किया कि अच्छा होगा यदि लक्ष्मण का ऊर्मिला के साथ, माण्डवी का भरत के साथ, श्रुतकीर्ति का शत्रुघ्न के साथ विवाह हो। उत्तर फल्गुनी नक्षत्र में विवाह निश्चित हुआ। विवाह से पहिले दशरथ ने चार लाख गौयें दान में दीं। उसी दिन भरत का मामा युधाजित भी मिथिला में आया। अग्नि के समक्ष चारों का विवाह हुआ।

विवाह होते ही विश्वामित्र हिमालय चले गये। दशरथ भी अपनी सेना के साथ अयोध्या के लिए निकले। वे सप्ताह भर यात्रा करते रहे। एक दिन अचानक अन्धेरा हो गया, धूल उठी। फिर ठंडी ठंडी हवा चलने लगी। उस समय रौद्र परशुराम प्रलय की तरह उनके सामने उपस्थित हुए। उनके कन्धे पर फरसा था और हाथ में चमचमाते धनुष और बाण।

परशुराम ने राम से कहा—"राम, सुना है कि तुमने शिव का धनुष तोड़ दिया है। सुना है बड़े होशियार हो, देखें तो कि इस विष्णु के धनुष पर बाण चढ़ा पाते हो कि नहीं। यदि तुम में इतनी शक्ति है तो मुझ से द्वन्द्व युद्ध करो।"

परशुराम ने विष्णु के धनुष के बारे में राम से इस प्रकार कहा—"इसको भी विश्वकर्मा ने स्वयं बनाया था। इसे देवताओं ने विष्णु को दिया था। शिव और विष्णु के बल को आजमाने के लिए उन्होंने उन दोनों में युद्ध करवाया। दोनों के पास एक एक बड़ा धनुष था। उनमें भयंकर युद्ध हुआ। उनमें विष्णु ही विजयी होता-सा लगा। यह जानकर कि शिव केशव में केशव ही अधिक बलवान था देवताओं ने दोनों से युद्ध समाप्त करने की प्रार्थना की। क्योंकि विष्णु को उससे अधिक बलशाली बताया गया था, इसलिए शिव ने क्रुद्ध होकर अपने धनुष और बाण को विदेह देश के राजा, देवरात को दे दिया।

विष्णु ने अपना धनुष भृगु वंश के ऋचीक के पास रख छोड़ा। यह बाद में ऋचीक के लड़के जमदग्नि को मिला। फिर उनके बाद परशुराम को।

दशरथ भयभीत हो काँपने लगे। उन्होंने परशुराम के पैरों पर पड़कर कहा—"स्वामी, इकीस बार क्षत्रियों का संहार करने के बाद आपने इन्द्र के सामने प्रतिज्ञा की थी कि फिर अस्त्र नहीं पकड़ेंगे। अब मेरे पुत्र की रक्षा करो। नहीं तो हमारे वंश का सर्वनाश हो जायेगा।"

परशुराम ने उनकी बातों को अनसुना कर दिया। राम क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने परशुराम के हाथ से वह धनुष ले लिया। उस पर बाण चढ़ाकर कहा—"अरे ब्राह्मण, मैं इस बाण से तुम्हारे प्राण ले सकता हूँ। परन्तु ब्राह्मण की हत्या करना मुझे पसन्द नहीं है। तो क्या इससे तुम्हारे पैर तोड़ दूँ! क्या मैं उन लोकों को ध्वंस कर दूँ, जहाँ तुमने तपस्या की थी! परशुराम निश्शक्त से हो गये, वे उन लोकों को खोने के लिए सिद्ध हो गये। राम ने बाण रख लिया।

फिर परशुराम महेन्द्रगिरि चले गये। राम ने अपने मूर्छित पिता को उठाया। उनको साथ लेकर वे अयोध्या पहुँचे।

कुछ दिन बीत गये। युधाजित ने अपने भान्जे भरत को अपने घर ले जाने की अनुमति माँगी। दशरथ इसके लिए मान गये। भरत और शत्रुघ्न अपने मामा के साथ चले गये।

सीता और राम बड़े प्रेम के साथ गार्हस्थ्य जीवन निर्वाह कर रहे थे। वे अपना प्रेम बाह्यरूप से व्यक्त नहीं कर रहे थे। पर वे एक दूसरे को खूब समझ रहे थे। राम राज कार्य में पिता की सहायता कर रहे थे। दिन सुखपूर्वक कट रहे थे। (बालकाण्ड समाप्त)

खलीफ़ा उमर

पैगम्बर मोहम्मद की मृत्यु के बाद उनके उपदेशों का प्रचार करने के लिए उनका मामा अबू बकर पहिला खलीफ़ा बना। वह मुसलमानों का गुरु था और सर्वाधिकार सम्पन्न नेता था। उसके बाद उमर इबन अल खत्ताब दूसरा खलीफ़ा हुआ।

हारून अल रशीद खलीफ़ा से तो हम परिचित हैं ही, पर इसके समय तक खलीफ़ा भी राजा महाराजाओं की तरह विलासी हो गये थे। वे अपना समय धार्मिक उपदेशों की अपेक्षा कला आदि के प्रोत्साहन में अधिक लगाते। पहिले खलीफ़ा इस प्रकार न थे। उनका जीवन औरों के लिए आदर्शप्राय था। उनके जीवन धर्म और समाज के लिए समर्पित से थे। इसी तरह का व्यक्ति खलीफ़ा उमर था। उसका जीवन निराडम्बर था। उसने इस्लाम के प्रचार के लिए युद्ध किये। उस धर्म का स्वयं उसने अच्छी तरह पालन किया। उसके बारे में बहुत-सी कहानियाँ प्रचलित हैं।

स्वार्थ किसे कहते हैं, उमर न जानता था। येमन राजा जब पराजित हुए तो उसने उनकी सम्पत्ति सब मुसलमानों में समान रूप से बाँट दी। इस सम्पत्ति में एक धारीधार कपड़ा भी था। यह सबको थोड़ा-थोड़ा ही मिल सका। उससे उसने अपने लिए एक तहमद सिलवा ली।

एक बार उसने मदीना की मस्जिद में तहमद पहिनकर अपने अनुयायियों को आज्ञा दी—"काफ़िरों से युद्ध करने के

लिए तैयार हो जाओ।" सब उपस्थित लोगों में से एक ने उठकर कहा—"हम आपकी बात न सुनेंगे।"

"क्यों नहीं?" उमर ने पूछा।

"आपने कहा था कि येमेन के धारीदार कपड़े के टुकड़े सबको देंगे। जो तहमद आपने पहिन रखी है, वह उसी से बनाई गई है। आप इतने बड़े हो। आपने अपने हिस्से के टुकड़े से कैसे इतनी बड़ी तहमद सिलवाई?" उस व्यक्ति ने पूछा।

उमर ने अपने लड़के अब्दुल्ला की ओर मुड़कर कहा—"इस आदमी ने जो सवाल किया है, वह सच ही है। इसका जवाब दो।"

तब अब्दुल्ला ने उठकर कहा—"मुसलमानो, हमारे नेता को तहमद बनवानी पड़ी। जो उनके हिस्से में कपड़ा आया था, तहमद के लिए काफ़ी न था, इसलिए मैंने अपना हिस्सा भी दे दिया। अगर मैं ऐसा न करता, तो उनके पास यहाँ आने के लिए कपड़े तक न होते।"

प्रश्नकर्ता ने कहा—"या अल्लाह, हम आपकी बात सुनेंगे।"

उमर, सीरिया, मेसोपोटेमिया, ईजिप्ट, फारस आदि देशों को जीतकर ईराक में बसरा और कूफ़ा नगर स्थापित करके जब मदीना आया, तो उसके कपड़े चीथड़े चीथड़े हो गये थे। वह उन्हीं को पहिन कर मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर लोगों की फ़रियादें सुनता। फ़रियादियों में वह कोई भेद न करता। उसके लिए ऊँटों का चरवाहा और लखपति सब बराबर थे। वह उनका न्याय करता।

इसी समय कुस्तुन्तुनिया के ईसाई शासक ने मदीना अपना एक गुप्तचर

भेजा। उसने उसको खलीफ़ा की श्री-सम्पत्ति और सेना आदि के बारे में जानकारी इकट्ठी करने के लिए कहा। उस गुप्तचर ने मदीना आकर लोगों से पूछा—"तुम्हारे राजा कहाँ हैं?"

"हमारे कोई राजा नहीं हैं। अल्लाह का खिदमतगार है। आश्रितों का नायक है। वह खलीफ़ा ही है। वह मस्जिद के पास दिखाई देता है। वहाँ वह या तो लोगों की फ़रियादें सुनता है, नहीं तो सोता रहता है।" मदीना के लोगों ने गुप्तचर से कहा।

मस्जिद का रास्ता मालूम करके गुप्तचर वहाँ गया। उसने देखा कि उमर तपते पत्थरों पर लेटा हुआ था। सिर के नीचे तकिया तक न था। उसके सिर से निकलते हुए पसीने की धारा बह रही थी। यह देख गुप्तचर ने कहा—"बड़े-बड़े राजा इस भिखारी के सामने झुक गये। एक बड़े साम्राज्य का यह नायक है। यदि ऐसा आदमी लोगों का नेता है, तो बेहतर है कि और राज्य परदा डाल लें।"

फ़ारस की राजधानी हस्तखर थी। वहाँ के राजा के पराजित होने पर राजमहलों
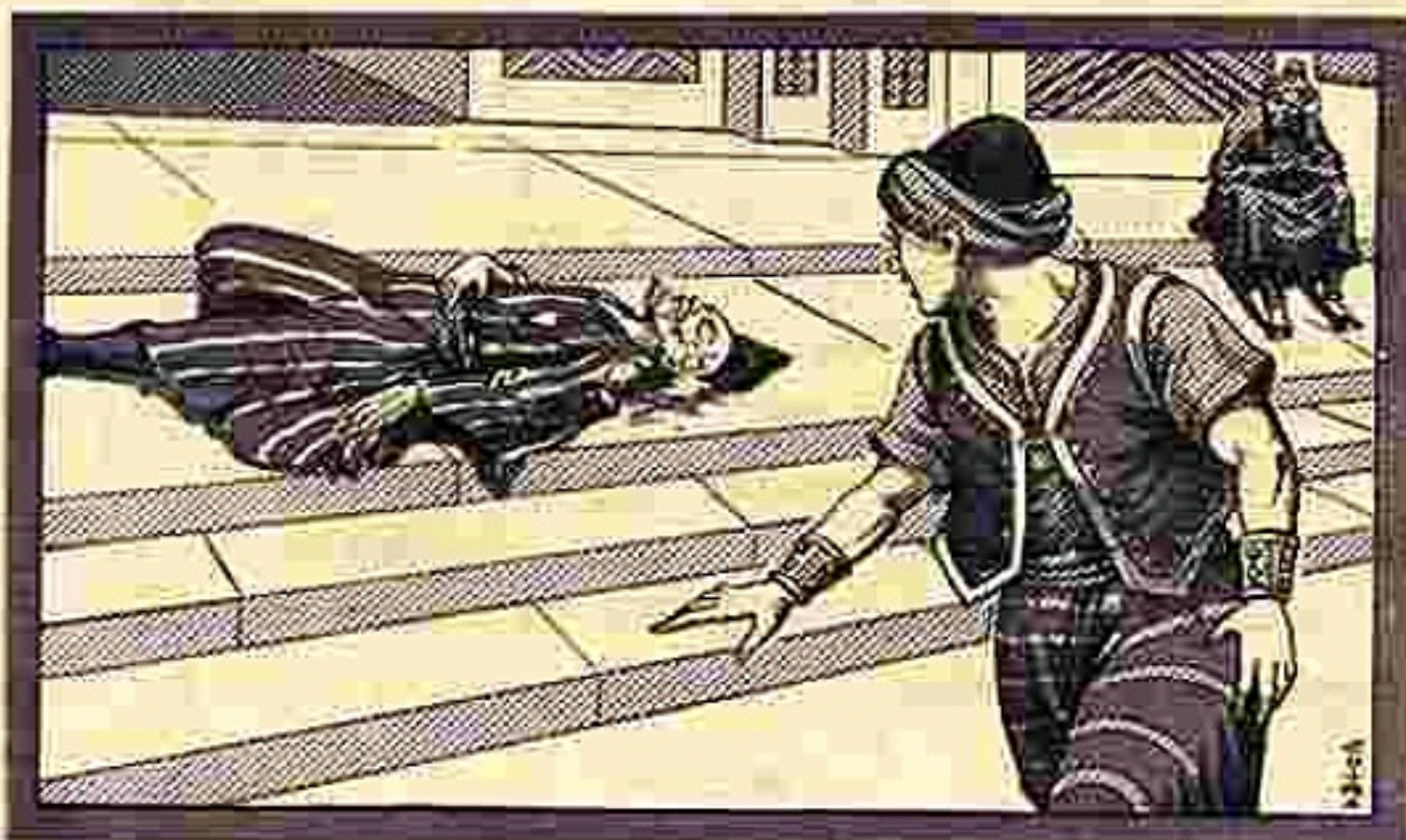
के तहस-तहस कर देने पर बहुत-सी अमूल्य वस्तुयें मिलीं। उसमें साठ फुट का रत्नों से जड़ा कम्बल भी मिला। उस पर एक बाग चित्रित था। फूलों को हीरों से और टहनियों को सोने के तारों से बनाया गया था। मुसलमान सरदार अबू बकर न जान सका कि उस कम्बल की कितनी कीमत थी। फिर भी यह जानकर कि वह बहुत कीमती था, उसने उसे खलीफ़ा को उपहार में देने के लिए रख लिया।

जब यह कम्बल उमर के हाथ आया, तो उसने उसके कई टुकड़े कर दिये और उन टुकड़ों को मदीना में रहनेवाले सरदारों में बाँट दिया। उसने अपने पास टुकड़ा भी न रखा। इनमें से एक टुकड़ा, कहा जाता है, बीस हज़ार दीनारों में बिका।

फारस के इस युद्ध में पराजित लोगों में सामन्त हर्मुज़ान भी था। वह इस शर्त पर हारा था कि उसका भविष्य खलीफ़ा स्वयं निश्चित करेगा। उसको दो मुसल्मान वीर, मदीना में उमर के पास ले गये। उन्होंने कहा कि यह सामन्त बड़ा सामन्त था। उसका बड़ा पद था। इसीलिए उसको राजोचित वस्त्र पहिनने दिये गये थे।

उमर मस्जिद के आंगन में फटे कपड़े पहिनकर फटी चटाई पर बैठा था। अच्छे कपड़े पहिना हुआ सामन्त उसको देखकर चकित रह गया। खलीफ़ा उस सामन्त को देखकर गरजा—"तुम्हें और तुम जैसों को दबाने के लिए अल्लाह ने इस्लाम बनाया है।"

फिर खलीफ़ा ने सामन्त के सब कपड़े उतरवा दिये। ओढ़ने के लिए एक मोटा-सा दुपट्टा दिया। "अब तुमने ठीक कपड़े

पहिने हैं। अब तो मानते हो कि ईश्वर ही सर्व सम्पन्न हैं।"

"तब यह ईश्वर का ही काम होगा। वे तटस्थ रहते, तो हम आपको जीत लेते। आपके मूत के आधार पर मैं अब यह निश्चित रूप से कह सकता हूँ। क्योंकि ईश्वर आपकी मदद कर रहे थे, इसलिए हमारी पराजय हुई।" फारस देश के सामन्त राजा ने कहा।

यह व्यंग्य सुनते ही खलीफ़ा की भौंहें सिकुड़ गईं। सामन्त ने सोचा कि उस पर आफ़त आनेवाली थी। प्राणों के भय को ढाँपने के लिए उसने पीने के लिए पानी माँगा। उसको मिट्टी के बर्तन में पानी दिया गया। उसे हाथ में रखकर उसने खलीफ़ा की ओर देखा।

"क्यों पीने में हिचक रहे हो!" उमर ने पूछा।

"मुझे डर है कि जब मैं पानी पी रहा होऊँगा, तो कोई मुझे मार न दे।" सामन्त ने कहा।

"इस तरह के सन्देहों से अल्लाह तुम्हारी रक्षा करें। जब तक तुम पानी पीकर अपनी प्यास नहीं बुझा लेते हो,

तब तक तुम्हारा कोई कुछ न करेगा—यों मैं तुम्हें अभय देता हूँ।" उमर ने कहा।

यह सुनते ही सामन्त हर्मज़ान ने अपने हाथ का कसोरा तोड़ दिया। उमर ने उसको सज़ा नहीं दी। उसे छोड़ दिया। उसने अपना वचन रखा। उसकी उदारता से प्रभावित होकर हर्मज़ान ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। वह यों बहुत प्रतिष्ठित हो गया।

जेरुसलम यद्यपि मुसलमानों ने जीत लिया था, तो भी वह ईसाइयों का पुण्य

क्षेत्र बना रहा। सोफ्रोनियस नाम का व्यक्ति उस नगर का प्रधान गुरु था। यह जानकर उमर मदीना से अकेला जेरुसलम में उससे मिलने गया। उसके ऊँट पर एक थैले में ऊँट के लिए चारा था, दूसरे में खजूर थे। इसके अलावा एक लकड़ी की थाली, पानी का बर्तन और उसके पास थे। उमर दिन-रात सफ़र करके वहाँ आया था। नमाज़ पढ़ने के लिए, गिरोहों के झगड़ों का फैसला करने के लिए वह रास्ते में रुका। नगर के स्वाधीनता पत्र पर हस्ताक्षर करके वह नगर में घुसा।

उमर को सोफ्रोनियस के साथ चलते चलते नगर में एक गिरजाघर दिखाई दिया। उसे देखते ही उमर को ख्याल आया कि उसके नमाज़ पढ़ने का समय हो गया था। सोफ्रोनियस से पूछने पर कि कहाँ नमाज़ पढ़ने के लिए जगह थी कि नहीं, तो उसने गिरजाघर दिखाया।

"मैं जानता हूँ कि तुम्हारा धर्म ठीक नहीं है। मैं तुम्हारे गिरजे में नमाज़ नहीं पढूँगा। क्योंकि जिस जगह मैं प्रार्थना करता हूँ, उसे तुरत मुसलमान स्वाधीन कर लेते हैं।" खलीफ़ा ने कहा।

प्रार्थना के बाद ईसाइयों के गुरु से खलीफ़ा ने कहा—"ऐसी जगह दिखाओ जहाँ हमारे मुसलमान मस्जिद बना सकें।"

सोफ्रोनियस खलीफ़ा को उस जगह ले गया, जहाँ सुलेमान का पूज्य स्थल था। वहाँ उसने मस्जिद बनाने के लिए कहा। उस प्रदेश में एक पवित्र शिला थी। उसे जेकब शिला कहा जाता था, उस शिला पर इधर-उधर का कूड़ा कर्कट था। खलीफ़ा ने किसी से कुछ न कहा, उस कूड़े में से थोड़ा कूड़ा लेकर, दूर फेंक आया। फिर वह जगह साफ़ कर दी गई और वहाँ उमर की मस्जिद बनी, जो आज भी है।

उमर ने अपना सारा जीवन मक्का और मदीना में बिता दिया। उसने कभी सिवाय चीथड़ों के कुछ न पहिना। हाथ में लाठी लेकर, गली-गली घूमता और मालूम करता कि कौन कौन क्या क्या धोखा कर रहा था। यदि व्यापारी बढ़े चढ़े दाम वसूल करते, तो वह उनको डाँटता-धमकता। यदि कोई अक्षम्य अपराध करता, तो वह उसे अपने हाथ की लाठी से पीटता।

एक बार जब वह उस गली से जा रहा था जहाँ दूध-दही बेचा जाता था, उसने एक बुढ़िया को धोखा करते हुए देखा। उसने उसके पास आकर पूछा—"साथ के लोगों को इस तरह धोखा देना क्या अच्छा है! कभी फिर दूध में पानी न मिलाना।" उसे उसने आगाह किया। उसने अपनी गलती कबूल कर ली।

अगले दिन खलीफ़ा उस तरफ़ से फिर गुज़रा। उस बुढ़िया को हमेशा की तरह दूध में पानी मिलाता देख उसने कहा—"अरे, कल ही तो तुम्हें कहा था कि दूध में पानी न मिलाया करो।"

"मैं कसम खाती हूँ कि मैंने दूध में पानी नहीं मिलाया है।" बुढ़िया ने कहा।

वह यों कसम खा रही थी कि दुकान के अन्दर से उसकी लड़की ने आकर कहा—"माँ, तुम उनसे भी झूट बोल रही हो। एक तो धोखा, तिस पर झूट। अल्लाह क्या तुम्हें कभी माफ़ करेंगे!"

खलीफ़ा का मन यह सुन शान्त हुआ। उसने बुढ़िया को तो नहीं फटकारा, पर अपने लड़को अब्दुल्लाह और आकिम की ओर मुड़कर कहा—"इस सयानी लड़की के साथ तुम में से कौन विवाह करेगा! उसके वैसे ही बच्चे पैदा होंगे, जैसा कि वह स्वयं है।"

आकिम उस लड़की के साथ विवाह करने के लिए मान गया। खलीफ़ा के लड़के का दूधिये की लड़की के साथ धूमधाम से विवाह हुआ।

उनका पोता ही अब्दुल अज़ीज़ खलीफ़ा बना। वह पाँच खलीफ़ाओं में एक था, जो बहुत प्रसिद्ध थे।

अमरावती

अमरावती आन्ध्र देश में, गुन्टूर से २२ मील की दूरी पर, कृष्णा नदी के तट पर है। यह सातवाहन काल में आन्ध्र की राजधानी थी। दक्षिण में महायान बौद्ध धर्म के केन्द्र धान्यकटक के यह समीप थी। ह्युन्त्सांग, जिसने भारत में स्थित बौद्ध धर्म के सभी केन्द्र देखे थे यहाँ भी सातवीं शताब्दी में देखने आया।

अमरावती में जो अवशेष प्राप्त हुए हैं, वे २००० वर्ष पूर्व के हैं। उस समय के आन्ध्र की उत्तम शिल्प कला इनमें दृष्टिगोचर होती है। ये सब एक ही बार नहीं मिले। १७९७ में प्रथम पाश्चात्य लोगों की दृष्टि इन पर पड़ी। पर इससे पहिले कि अमरावती के शिल्प के ऐतिहासिक मूल्य का अंकन हो सका अमरावती स्तूप पूरी तरह भग्न हो गया था। आज अमरावती के अवशेष कुछ लन्दन में, कुछ मद्रास में, कुछ कलकत्ता में और कुछ अमरावती में ही हैं। २००० वर्ष पहिले आन्ध्रों की पोशाक क्या थी, उनके आभूषण क्या थे, कैसे थे, इन सब के बारे में यहाँ के शिल्प से अनुमान किया जा सकता है।

अमरावती में शिल्पों के साथ कुछ प्राचीन उत्खनित घोषणायें भी मिली हैं। इनमें कुछ मौर्य लिपि और कुछ ईक्ष्वाकु लिपि में, कुछ सातवाहन लिपि में हैं। इसलिए यह अनुमान किया जा सकता है कि यह स्तूप मौर्य काल से ईक्ष्वाकु वंश के समय तक प्रसिद्ध था। इस स्तूप के खाके को कर्नल कालिन मेकन्जी ने, बहुत से प्रमाणों के आधार पर कुछ निर्मित किया है।

१. **प्रेमसागर, कोयम्बटूर**

हम जो प्रश्न करते हैं, क्या आप उनका उत्तर अलग कार्ड में देते हैं?

नहीं तो, इसी स्तम्भ में देते हैं।

२. **तौसीफ ए. शरफानी, रामपुर**

यदि "चुटकले" लिखकर भेजें जायें तो क्या आप छापेंगे?

अभी तो "चन्दामामा" में उतनी जगह नहीं है। हाँ, यदि चुटकले बहुत अच्छे हुए, तो उनके लिए स्थान निकालेंगे ही, कहीं न कहीं, कभी न कभी।

३. **विनादकुमार, डिब्रूगढ़**

मैं चाहता हूँ कि "चन्दामामा" में वर्ग पहेली प्रतियोगिता हो? क्या आप इससे सहमत हैं?

सहमत होने की बात तो तब उठेगी, यदि इसके देने की गुँजाइश हो। फिलहाल जगह की बहुत तंगी है।

४. **प्रेमकुमार शर्मा, वाड़ी**

क्या जो चित्रित "जुड़वा रचना" तैयार हुई है, उसमें वैसे ही चित्र हैं जैसे ही "चन्दामामा" में?

हाँ।

५. **राजेन्द्रकुमार कपूर, बड़नगर**

आप चन्दामामा में जो इधर उधर की एडवर्टाइज़मेन्ट देने में कम से २० पेज-भर देते हैं, क्या इसकी जगह आप कोई कहानी नहीं छाप सकते?

अगर ये पृष्ठ न हों, तो आपको "चन्दामामा" जिस मूल्य पर मिल रहा है, शायद न मिले।

६. जयप्रकाश राव, वाराणसी

क्या आप खेल सम्बन्धी कोई लेख छापने की कृपा करेंगे?

हमने कभी जादू के बारे में एक लेख माला दी थी, जिसे पढ़कर हर कोई जादू कर सकता था। यदि हमारे पसन्द की चीज़ हमें मिली तो छापने की कोशिश करेंगे।

७. महेशकुमार गुप्ता, अमरावती

क्या हम फ़ोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता के लिए एक कार्ड पर एक, इस प्रकार दो-तीन कार्डों पर दो-तीन परिचयोक्तियाँ अपने ही नाम से एक साथ भेज सकते हैं।

हाँ, बड़ी खुशी से।

क्या आप पुरस्कृत परिचयोक्ति की पूर्व सूचना देते हैं?

नहीं, हम उन्हें यथा समय प्रकाशित करते हैं।

८. खेलसिंह मेजावी, बिलासपुर

अगर मैं "चन्दामामा" में अपना फोटो छपवाना चाहूँ तो?

कभी आपने किसी ग्राहक व पाठक की फ़ोटो "चन्दामामा" में देखी? "चन्दामामा" के पन्ने पलटिये, आप खुद अपने प्रश्न का उत्तर पायेंगे।

फ़ोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता के अन्तर्गत जो विजेता होते हैं क्या आप उनके चित्र भी प्रकाशित कर सकते हैं?

अभी तो नहीं भाई। इस बारे में कुछ कठिनाइयाँ हैं।

९. प्रदीप, लखनऊ

अगर हम मद्रास आयें, क्या आप "चन्दामामा पब्लिकेशन्स" देखने की अनुमति दे सकते हैं?

हाँ, अवश्य।

१०. प्रीसाकान्त शाह, अजमेर

"दीपावली अंक" में आप कौन कौन-सी नवीन सामग्री दे रहे हैं?

स्वयं देखिये।

११. श्याम शर्मा, आगरा

क्या आप फ़ोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता का ईनाम ६ भाषाओं में अलग-अलग देते हैं?

हाँ।

Photo by P. Krishna Kumar

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

भौंरा मुझे देख तरसाया !

प्रेषक :
रतनलाल पाटोदिया-बम्बई

Photo by V. Thithu

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

माली मुझे देख हर्षाया !!

प्रेषक :
रतनलाल पाटोदिया-बम्बई

अन्तिम पृष्ठ

जब दुर्योधन ने कीचड़ में प्रवेश किया, तो संजय वहाँ से निकला। थोड़ी देर में उनको कृप, कृतवर्मा, अश्वत्थामा दिखाई दिये। उन्होंने उससे दुर्योधन के बारे में पूछा।

अश्वत्थामा को यह मालूम होते ही कि दुर्योधन कीचड़ में छुपा हुआ था, तो उसने रोते हुए कहा—"शायद वह यह नहीं जानता है कि हम अभी जीवित हैं। हम तीनों और वह मिलकर शत्रुओं को हरा देंगे।"

फिर वे संजय को भी रथ पर चढ़ाकर शिविर में आये। सूर्यास्त हो रहा था। जो सैनिक नहीं मरे थे, वे वृद्धों और स्त्रियों को हस्तिनापुर ले जा रहे थे। निर्जन शिविर में उन का मन न लगा। कृप, कृतवर्मा और अश्वत्थामा, दुर्योधन को देखने निकले।

युद्ध में विजय प्राप्तकर युधिष्ठिर और उनके भाइयों को बहुत सन्तोष हुआ। दुर्योधन को मारने के लिए वे युद्ध-भूमि में घूमे फिरे। जब वह कहीं न दिखाई दिया, निराश हो, वे अपने शिविर में वापिस आ गये थे।

कृप, कृतवर्मा और अश्वत्थामा पोखर के पास आकर चिल्लाये—"राजा, बाहर आओ, अपने शत्रु पाण्डवों से युद्ध करो। हम तीनों तुम्हारी मदद करेंगे। विजयी हुए तो राज्य मिलेगा, नहीं तो मरकर स्वर्ग।"

दुर्योधन ने कहा—"हम थके हुए हैं। आज रात आराम करो। कल उठकर पाण्डवों से युद्ध करेंगे।"

परन्तु अश्वत्थामा ने कहा कि अभी युद्ध करना चाहिए। शत्रु संहार करने की उसने शपथ ली।

कीचड़ में से दुर्योधन और बाहर से उसके मित्रों को यों बातें करते कुछ लोगों ने सुना। ये लोग, हमेशा भीम को माँस दिया करते। पाण्डवों के शिविर में जाकर, उन्होंने भीम से यह बात कही।

जल्दी ही कृष्ण, युधिष्ठिर आदि पाण्डव योद्धा पोखर के पास आये। उनको आता देख, कौरव योद्धा दूर चले गये। युधिष्ठिर ने जलीकटी सुनाकर दुर्योधन को उत्तेजित किया। दुर्योधन अपने शत्रुओं में से किसी एक से गदा युद्ध करने के लिए मान गया। वह पोखर से बाहर निकला। भीम दुर्योधन से युद्ध करने के लिए उद्यत हो गया।

इतने में बलराम तीर्थ यात्रा से वापिस आया। यह सुन कि उसके शिष्य, दुर्योधन और भीम गदा युद्ध में अपना अपना बल आजमाने जा रहे थे, तो वह भी औरों के साथ प्रेक्षक के रूप में गया। तब भीम और दुर्योधन में गदा युद्ध प्रारम्भ हुआ।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जनवरी १९६२ :: पारितोषिक १०)
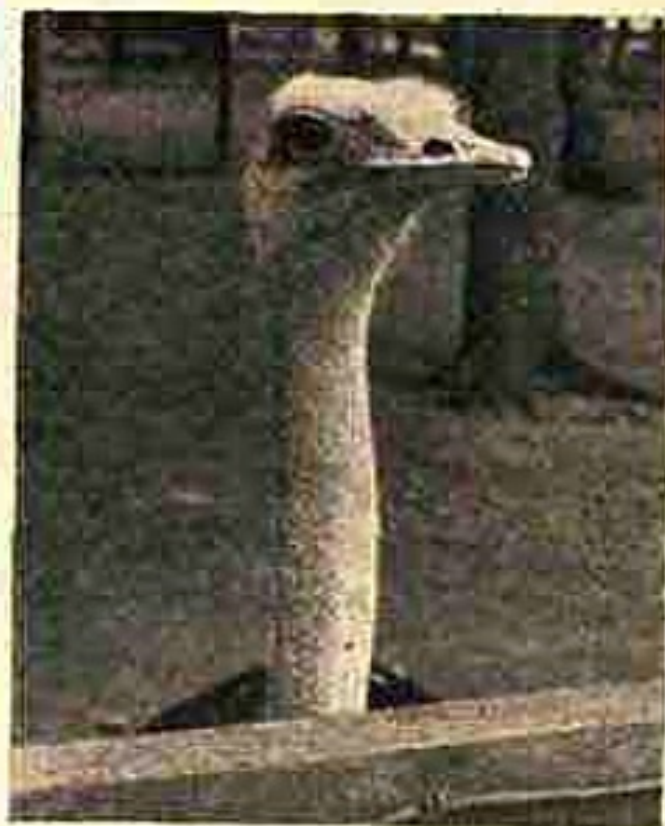
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७ नवम्बर '६१ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता,
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

नवम्बर - प्रतियोगिता - फल

नवम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : भौंरा मुझे देख तरसाया !

दूसरा फ़ोटो : माली मुझे देख हर्षाया !!

प्रेषक : रतनलाल पाटोदिया,
६, लक्ष्मी रोड, जूना नागरदास रोड, अन्धेरी (पूर्व) बम्बई-५८

चित्र-कथा

एक रोज दास वास बाग में खेल रहे थे कि गड़रिया लड़का वहाँ आया।

"तुम सोच रहे हो कि मेरा पालतू बन्दर भाग गया है! नहीं तो वह मेरे ही पास है। उसे मैंने बोलना भी सिखा दिया है। आओ देखो।" दास और वास उसके साथ गये। झाड़ियों के पीछे खड़े बन्दर से पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है! आवाज आई "सोमू" इस बीच "टाइगर" झाड़ियों में जा घुसा। तुरत गड़रिये के भाई की आवाज आई "टाइगर मेरा पैर काट रहा है।" वह झाड़ियों में से बाहर भाग निकला। दास और वास हँसे।

Printed by B. NAGI REDDI for the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

दिवाली की शुभकामनाएँ !

सब तरह की रुचि तथा फ़ैशन

के लिए योग्य

रुआबदार कपड़ा

क्रिसलिन ★ एम्बॅसी

डेलीगेट तथा सलीन

मर्सराइज़्ड सूटिंग्ज़ और टसोर

बनानेवाले :

श्री कृष्णा स्पिनिन्ग ॲण्ड वीविन्ग मिल्स (प्राइवेट) लिमिटेड बेन्गलोर-२

दिवाली की शुभकामनाएँ !

सुन्दर तथा टिकाऊ कपड़ा

★

शर्टिन्गज़् ★ पॉपलिन् ★ धोतीज़्

वायल्स् तथा टसोर

बनानेवाले :

रामकुमार मिल्स (प्राइवेट) लिमिटेड बेन्गलोर - २